श्रीगणेशाय नमः

रामरसामृतसागर नाटक

पञ्चम भाग

दोहा (नेपथ्य)

रघुबर गुण के गुनन को, सेवक के नहिं बूत।
दास जान बायूसुवन, गहहु बांह मजबूत॥

सोरठ

श्रीरघुबीर विवाह, परम रम्य सुन्दर सुखद।
देखन की अति चाह, सो देखाइये पवनसुत॥

प्रथमाङ्क * दृश्य सभा

(जनक शतानन्दादि विश्वामित्र राम लखनयुत विराजमान हैं)

जनक—(विश्वामित्र से)

चौपाई

मोहिं कृतकृत्य कीन द्वौ भाई। अबजो उचित सोकहिय गुसाईं॥

विश्वामित्र— चौपाई

मेरे मति नरनाह प्रबीना। रहा विवाह चाप आधीना॥
टूटत ही धनु भयो विवाहू। सुर नर नाग बिदित सब काहू॥

दोहा

तदपि जाय तुम करहु अब, यथा बंश ब्योहार।
बूझि बिप्र कुल बृद्ध गुरु, बेद बिदित आचार॥

चौपाई

दूत अवधपर पठवहु जाई। आनै नृप दशरथहिं बुलाई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जनक—(स्वामी जो आज्ञा) दूत को पत्र देकर अवध को भेजना।

(नेपथ्य)

चौपाई

पहुँचे दूत राम पुर पावन। हरषे नगर विलोकि स्वहावन॥

प्रथमाङ्क

*

दृश्य सभा

(राजा दशरथ मन्त्रिनयुत विराजमान हैं द्वार पै द्वारपाल खड़े हैं दूत का प्रवेश)

दूत—(द्वारपाल से)

दोहा

द्वारपाल महिपाल सों, जाय बताओ हाल।
मिथिलापुर के दूत हम, पठयो जनक भुआल॥

द्वारपाल—(राजा समीप जाय हाथ जोड़)

दोहा

छत्रपती छायहु सुयश, क्षमा दया की खान।
निमिकुलभूषण जनक नृप, पठयो दूत सुजान॥

दशरथ—बुला लावो.

(दूत का प्रवेश)

दूत—(प्रणाम करि पत्र दै) श्रीमहाराज निमिकुलशिरताज का यह पत्र लाया हूँ.

(राजा का सहर्ष पत्र लै हृदय से लगाय मन्त्री द्वारा सब सभा को सुनाना)

दशरथ—(सुमन्त्र को पत्र दै) मन्त्रिबर ! यह जनकराज का पत्र सबको सुनावो.

सुमन्त्र—बहुत अच्छा. (पत्र ले बाँचना)

स्वस्तिश्री गोब्राह्मणहितकार सर्वोपर सरदार समस्त लोक में गङ्गधार अनुहार सुयश बिस्तार करनहार श्रीअवधेश सरकार को इस दास की बिनय बहु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रकार व बारम्बार जोहार स्वीकार हो. इत को समाचार इस प्रकार है कि मैं आपके आज्ञाकार ने अपनी पुत्री के बर बिचार हित त्रिपुरार धनु रङ्गभूमि में धार यह प्रण किया कि जो इसको चढ़ाय अथवा टार देइ उसको बिना बिचार कुमारी का भरतार करूँ. प्रथम बार जब यज्ञ का बिचार हुआ तब अनेकों भूपकुमार सहित रावण बाणासुर बलधार आय बहुतेक ज़ोर मार हार हारके चले गये. अब की बार फिर यज्ञ सँवार सुनि चार किनार पृथ्वी के कई हज़ार सुभट सरदार व कोटिन सुर सुरार मनुज शरीर धार दास के द्वार को चमत्कार करते भये. उसी समय जो सरकार ने मुनि उपकार बिचार निज राजकुमारों को दुष्टनविदारन हित जाने की आज्ञा दी थी वे मग में दुष्ट ताड़का पछाड़ व मारीच को एक शर मार सौ योजन समुद्र पार डार सुबाहु आदि संहार मुनि यज्ञ रक्षाकार हुए. और मेरे दूत द्वार धनुष यज्ञ के समाचार पाय सहित मुनि मण्डली के पधार राह में गौतम नारि को तार गङ्गा पार उतर किञ्चित श्रम नेवार मेरे अँधियार पुर को उजियार कर अनेक प्रकार से सबको आनन्द दे रङ्गभूमि में बिराजमान हुए. सकल भूप दरबार इन कुमारों का शशि सम मुखारबिन्द निहार नखत अनुहार टिमटिमाने लगे. जब बन्दीजनों ने मेरा प्रण पुकार धनु का विस्तार सुनाया, तब अनेक भटमानी अपने २ हथियार सँभार फेंटा कस तय्यार हो धनु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ओर सिधार झखमार लौट आये. तहाँ रावरे कुमार सर्व जीवन आधार महेश चाप खण्ड महि डार जग कीरति पसार मुझको अपार शोकसागर से उबार कृतार्थ किया. तत्पश्चात् धनु टंकार का हाहाकार शब्द सुनि जमदग्निकुमार सभा मँझार आय अपार कोप कर बहुत प्रकार आँख निकार बार बार कुठार सुधारते भये परन्तु लक्ष्मणजी ने उत्तर प्रति उत्तर की बौछार करि उनका मद मार दिया, तब वै चरण रज शीश धार पाहि२की पुकार कर द्वार से दूर ह्वै तपहेत सिधार गये. प.

कोटिन मुख कहि जात न प्रभु के एक २ उपकार, धनि २ आप आपके बालक करत सुयश बिस्तार. अब आप मेरी विनय को स्वीकार करि शुभ साइत बिचार सहित परिवार लोक व्यवहारार्थ बरात तय्यार कर दास के शीश पगधार कुल रीति अनुसार मेरी पुत्री को अङ्गीकार कर इस ऋण का भार मेरे शिर से उतार मुझको उद्धार कीजिये—अग्रे शुभम्।

सह बन्धु परिवार आपका ताबेदार (जनक)

चौपाई (नेपथ्य)

खेलत रहे तहाँ सुधि पाई। आये भरत सहित लघु भाई॥

भरत—(हाथ जोरि)

दोहा

तात सुन्यो आयो कोई, लायहु राम सँदेश।
कुशल प्राण प्रिय बन्धु दोउ, अहहिं कहहु केहि देश॥

दशरथ—हे पुत्र! यह लो रामलाल की चिट्ठी बाँच लो.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई (नेपथ्य)

तब नृप दूत निकट बैठारे। मधुर मनोहर वचन उचारे॥

दशरथ— कवित्त दण्डक

भइया हमारे हैं कुशल प्राण प्यारे तो, नीके निज नैनन सों तुम तो निहारे हैं। धनु बाण धारे श्याम गौर रूप वारे दोउ, अबहीं बहु बारे मात पितु के दुलारे हैं॥ जनकपुर पधारे तो भूप कस चिन्हारे उन, कहिये स्वभाव जो कबहूं जुहारे हैं। जब ते सिधारे मुनि साथ सुकुमारे मेरे, तबसे समाचार साँच पाये मुख तुम्हारे हैं॥१॥

चौपाई (नेपथ्य)

सुनि प्रिय बचन दूत मुसकाने। बोले बचन प्रेमरस साने॥

दूत— दोहा

सुनहु महीपति मुकुटमणि, तुम सम धन्य न कोउ।
राम लखन जाके तनय, बिश्व बिभूषण दोउ॥

कवित्त

राजन तुम्हारे सुत पूछिबे के योग नाहिं, नरन में सिंह द्वीप द्वीप उजियारे हैं। लागत मलीन यश आगे शशि जाके भूप, लाजत है भानु तेज बीरता निहारे हैं॥ ऐसे जो प्रतापी तिन्हैं आप कहैं चीन्ह्यो कस, सूरज के देखन को दीप कोउ बारे हैं। सीयके स्वयम्बर में आये महिपाल बहु, मद गार दीन तिन रावरे दुलारे हैं॥२॥

शम्भु के शरासन को टारेव नाहिं कोउ, भूप बहुत लगाय जोर बीर सब हारे हैं। बाण बलवान जौन जाहिर जहान बीच, सोउ धनु देखि हार मान के सिधारे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हैं॥ बिनहीं प्रयास जो उठायो शैल शंकरहि, ओउ तौ निराश ह्वैके लङ्क पगु धारे हैं। सोइ चाप कमल की नाल के समान मान, तृण सम तोर डारे रावरे दुलारे हैं॥ ३॥

कम्पति हैं भूप जाके रूप कें निहारे नेक, ताके मद मान भङ्ग सुत दोउ डारे हैं। सुनि रव घोर धनु आये भृगुनायक सो, करिके सरोष तहाँ आँखिहू निकारे हैं॥ भुज बल राम के बिलोक्यो जब भली भाँति, दै कै धनु हाथ जोरि बन को सिधारे हैं। मही में अनेक बेष देखे हैं नरेश बड़े, ऐसे ना निहारे जैसे रावरे दुलारे हैं॥

(नेपथ्य)

चौपाई

दूत बचन रचना प्रिय लागी। प्रेम प्रताप बीररस पागी॥
सभा समेत राव अनुरागे। दूतन देन निछावर लागे॥

(राजा प्रसन्न हो दूत को मणिमाला देते हैं)

दूत—(कानों पर हाथ धरि) महाराज ! ऐसा उचित नहीं है आपका राजा जनक का सम्बन्ध हो चुका इसलिये आपका धान्य ग्रहण करना अयोग्य है.

मन्त्री—वाह २ क्यों न हो राजा जनक के तो दूतही हो.

(नेपथ्य)

दोहा

तब उठि भूप बशिष्ठ कहँ, दीन्ह पत्रिका जाय।
कथा सुनाई गुरुहि सब, सादर दूत बुलाय॥

(सबका प्रस्थान)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रथमाङ्क * दृश्य स्थान वशिष्ठ

(वशिष्ठजी शिष्यों सहित विराजमान हैं राजा का प्रवेश प्रणाम करि बैठते हैं)

वशिष्ठ—राजन् ! आज तो आप अति हर्षित देख पड़ते हैं.

दशरथ—नाथ हर्ष का कारण (पत्र दै) यह निमिकुल भूषण जनकराज का पत्र है इसको बाँचिये.

वशिष्ठ—(पत्र बाँचि) राजन् ! आप सपरिवार धन्य हैं अब शीघ्र बरात साज पयान कीजिये.

(राजा का प्रस्थान)

प्रथमाङ्क * दृश्य राजभवन

(कौशल्यादि रानियाँ विराजमान हैं दूत को बास कराय राजा का प्रवेश)

(और सबको जनकजी का पत्र सुनाना सबका हर्षयुत हो जाना भरतजी का प्रवेश)

दशरथ— चौपाई

भरत सचिव सब लेव बुलाई। हय गजस्यन्दन साजहु जाई॥
चलहु बेग रघुबीर बराता। न्योति देहु पुर जेतिक जाता॥

(भरतजी का सब बरात साजना शुभ साइत बिचार राजा का सहित बरात पयान करना)

प्रथमाङ्क * दृश्य जनकपुर

बरात का जनकपुर पहुँचना और कुलरीत्यनुसार द्वारचार व विवाह ज्योनार होना स्त्रियों का समय २ पर गान करना भूरि दक्षिणा का बटना और ज्योनार के समय गारीगान होना पान पाय जनवासे आय नृत्य होना नेगियों का पृथक् २ आय नेग पाय जाना.

बन्दीजन— कवित्त

सोहै शिर चीरा जामें पाँति २ हीरा जड़े, तुर्रा और
कलगी ने शोभा सरसादी है। जामा ज़रतारी जोहि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मोहैं नर नारी सब, भूषण प्रभा ने सभा खूब चमकादी है। भूर अरु निछावर से याचक अयाचक भे, राजधानी मिथिला में कीरति बिछादी है। छादी आहिलादी जोड़ी बिधि ने मिलादी, राम बना शाहज़ादा सीय बनी शाहज़ादी है॥

(इनाम पाय प्रस्थान)

भाट— कवित्त

पुण्य को पताका फहरात फिरै देशन में, पाप के पहार फाटि गये सुने नाम के। दान सन्मान से तो याचक अयाचक भे, दुःख औ दरिद्र छूटि गये आठो याम के॥ बाजत नगाड़े द्वारे चोबदार भनैं यश, छाई खुशियाली आज ब्याह सीताराम के। अवध नरेश की महेश शेष रक्षा करैं, लिखि पाई चंदा महाराज ग्राम ग्राम के॥

सुमन्त्र—आइये रायजी कहाँ मकान है।

भाट— दोहा

मिथिलापुर के निकट महँ, खेरा है यक ग्राम।
माफी जनक नरेश की, राघव कवि के नाम॥

काली कल्यान करै भगवती आनन्द किहे रहै दशरथ महराज की जय होय राजा माफ़ी पाई, हम देश २ यश गाई, और का महराज।

दशरथ—मन्त्रीवर ! रायजी को बारह गाँव माफ़ी दी जावै।

(रायजी का माफ़ी पाय प्रस्थान नटों का प्रवेश)

नट—है सरकार की जय होय, है सरकार की राज बनी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रहै, है सरकार दुलहा दुलहिन भगवान् बनाये रहै, है तोरी धोती का सदक्का रुपया पाय जाई। हां खेलारी खेलजा खेलजा (ढोलक बजाकर) है चिनिगिया हाथ पैर बचाय के खेलजा (बीर मनाना)

पठा खेलैरे बंसवा प खेलं अरे बिरवा राख्यो नजरिया-हाँ खेलारी खेलजा आपन जान बचायके सब सरकारन का देखाय के।

चिनिगिया—औ जो गिरौं ?

नट—पेट फाटि जाय.

चिनिगिया—औ जो खेलि आवौं ?

नट—तौ ले रुपय्या छनननन और पहिरन.

(नटों का इनाम पाय प्रस्थान)

और अनेकों भाँड़ व नृत्यकादिकों का आना और गान तानकर इनाम पाय जाना दरबार का विसर्जन होना।

इति श्रीरामरसामृतसागरनाटके सकलकलिकलुषविध्वंसने रामविवाहोत्सव-वर्णनं नाम पञ्चमो भागः समाप्तः।

शुभं भूयादितिशम्।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्रीगणेशाय नमः

राम रसामृतसागर नाटक

छठवाँ भाग

दोहा (नेपथ्य)

बन्दौं श्रीसरयूपुलिन, बन्दौं श्रीअवधेश ।
बन्दौं सीतारामपद, भूषण वंशदिनेश ॥
श्रीशारद महिमा अमित, बन्दौं बारम्बार ।
विघ्नहरण मङ्गलकरण, बन्दौं शम्भुकुमार ॥
पवनपुत्र संकटहरन, मङ्गलमोद निदान ।
मैं मति मन्द रचन चहौं, लीला श्रीभगवान ॥
दीजे कछु विद्या अधिक, जानिमोहिं निजदास ।
बार बार बिनवौं तोहीं, पूरण कीजै आस ॥
श्रीगुरुचरण सरोजरज, निजमन मुकुरसुधार ।
बरणौं रघुबर बिमलयश, जो दायक फलचार ॥

चौपाई

जबते राम ब्याहि घर आये । नित नव मङ्गल मोद बधाये ॥
राम रूप गुण शील स्वभाऊ । प्रमुदित होहिं देखि सब काऊ ॥

दोहा

सबके उर अभिलाष अस, कहैं मनाय महेश ।
आप अछत युवराजपद, रामहिं देहिं नरेश ॥

चौपाई

एक समय सब सहित समाजा । राजसभा रघुराज बिराजा ॥
रायस्वभाय मुकुर कर लीन्हा । बदन बिलोकि मुकुटसम कीन्हा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रथमाङ्क * दृश्य राजभवन

(सभा एकत्र है राजा का हाथ में दर्पण ले मुख देख मुकुट सँभारना)

दशरथ—(स्वतः) अब तो मैं वृद्ध हो गया केश भी श्वेत हो गये अब मुझको उचित है कि रामचन्द्र को युवराज कर दूँ जिसमें मेरे सब मनोरथ सफल हो जावें परन्तु गुरूजी से पूछि लेना योग्य है।

प्रथमाङ्क * दृश्य स्थान वशिष्ठ

(वशिष्ठजी विराजमान हैं राजा का प्रवेश प्रणाम कर बैठि जाना)

वशिष्ठ—राजन् ! कहिये कुशल आनन्द तो है आज आपका मुखारविन्द अति हर्षित है कोई नवीन आनन्द की बात है।

दशरथ— पद

आयों मैं पास तुम्हारे सो स्वामी मेरे ॥ भये राम सब बिधि सब लायक कृपा कीन मुनि झारे रे सो स्वामी मेरे ॥ सेवक सचिव सकल पुरबासी अरु जो मित्र हमारे रे सो स्वामी मेरे ॥ रामहिं देखि महासुख पावत लागहिं सबहिं पियारे रे सो स्वामी मेरे ॥ पद युवराज कृपाकरि दीजै आज्ञा लेन सिधारे रे सो स्वामी मेरे ॥ आयों० ॥

चौपाई

मोहिं अछत यह होहि उछाहू । लहहिं लोग सब लोचन लाहू ॥
पुनि न शोच तनरहै कि जाऊ । जेहि न होहि पाछे पछिताऊ ॥
प्रभुप्रसाद शिव सकल निबाहीं । यह लालसा एक मन माहीं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वशिष्ठ— चौपाई

सुन नृप जासु बिमुख पछिताहीं। जासु भजन बिनु जरनन जाहीं॥
भये तुम्हार तनय सो स्वामी। राम पुनीत प्रेम अनुगामी॥

दोहा

बेगि बिलम्ब न करिय नृप, साजिय सकल समाज।
सुदिन सुमङ्गल तबहिं जब, राम होहिं युवराज॥

(राजा का प्रणाम करि जाना)

प्रथमाङ्क * दृश्य राजभवन

चौपाई (नेपथ्य)

मुदित महीपति मन्दिर आये। सेवक सचिव सुमन्त बुलाये॥

(राजा सिंहासन पर विराजमान हैं मन्त्रियों का प्रणाम करना)

दशरथ— ग़ज़ल

मुदित मन दीन्ह गुरु शासन करो युवराज रघुबर को॥ हमारी आयु है खसकी जरठपन छागया तन में। तुम्हारी सबकी मति होवै तो दे दूं राज रघुबर को॥ १॥ मुझे तो अब भजन भाता न भाता राज का झगड़ा। अब अपने सर प तुम सब मिल करो सरताज रघुबर को॥ २॥ बिताई बैस सब सुख में यही अभिलाष है उर में। पिन्हाऊँ हाथ से अपने मैं अपना ताज रघुबर को॥ ३॥ खिलाया और पढ़ाया ब्याह करि लाया सिखाया सब। कनारे बैठकर अब तो लखूं सुख साज रघुबर को॥ ४॥ मुदित मन दीन्ह गुरु आज्ञा करो०।

सुमन्त— दोहा

युग २ जीवहु जगतपति, अचल सदा यह राज।
जगमङ्गल भल काज यह, राम होहिं युवराज॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दशरथ— दोहा

मन्त्रीबर मुनिराज कर, जोइ २ आयसु होय।
राम राज्य अभिषेक हित, बेगि करिय सोइ सोय॥

सुमन्त—बहुत अच्छा।

प्रथमाङ्क * दृश्य स्थान वशिष्ठ

(वशिष्ठजी विराजमान हैं सुमन्त का प्रवेश)

सुमन्त—(हाथ जोरि) महाराज ! राज्य अभिषेक हित जो वस्तु आवश्यक हो उसकी आज्ञा दीजिये।

वशिष्ठ— कवित्त

तीरथ को जल औ सकल फल फूल दल, रङ्गरङ्ग रोम पाट पटल मँगावहू। नारियल पुंगिफल और बस्तु माङ्गलीक, सफल सुवृक्ष थल २ में गड़ावहू॥ महल २ प्रति रचना रचावो भल, द्वार २ कलश सजल धरवावहू। अतल बितल औ रसातल स्वतल तल जहाँ लगि महिदेव सकल बुलावहू॥

सुमन्त—स्वामी जो आज्ञा।

(सुमन्त का सब वस्तु एकत्र करना बाजों का बजना नृत्य होना)

प्रथमाङ्क * दृश्य नगर

दोहा (नेपथ्य)

राम राज्य अभिषेक सुनि, हिय हर्षे नर नारि।
लगे सुमङ्गल सजन सब, बिधिअनुकूल बिचारि॥

चौपाई

हाट बाट घर गली अथाई। कहैं परस्पर लोग लोगाई॥

पुरवासी— दादरा

१—केहि बेरिया है काल्ह लगन भाई।
२—कल्ल होते तड़के (१) क्या मुँह के धुँधुरके
(३) नहिं कुछ दिन चढ़िके।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

१—अजी वाह वाह वाह भई मन भाई ॥ केहि बेरिया है काल्ह लगन भाई ॥ कब होगा प्रभात (२) जब बीतैगी रात (१) कब बीतैगी रात (३) जब होगा प्रभात।

१—तुम तो करते हो यार मसखराई। केहि बेरिया है काल्ह लगन भाई ॥

(सबका प्रस्थान)

प्रथमाङ्क
दृश्य मार्ग
(नेपथ्य)

चौपाई

देखि मन्थरा नगर बनावा। मङ्गलमञ्जुल बाजबधावा ॥
पूछिसि लोगन काह उछाहू। रामतिलक सुनिभा उरदाहू ॥

(मन्थरा का चारों ओर घूमकर देखना)

पुरवासियों से—
मन्थरा—

पद

नगर के लोगों कौन से काज ठने ॥ काहे को बाजत बाजने हो काहे को भीर घने ॥ काहे को इत उत हर्षित घूमत पुर के लोग बने ॥ नगर० ॥ काहे को बंदनवार बँधावत काहे को कलश चुने ॥ नगर के लोगों ० ॥ काहे को सब मिलि मङ्गल गावत काहे बितान तने ॥ नगर के० ॥

पुरवासी—

कवित्त

ए री मति तेरी किन घेरी यहि बेरी जो हँसत हम से री तू बताव बिन काज है। घरकी तैं चेरी सो तो बात नाहिं हेरी कछु घूम देख लेरी चहुँ फेरी जौन साज है ॥ नाहीं आवसेरी भीर होत है घनेरी सब नाग नटी टेरी हेरी आज महाराज है। बाजत है भेरी आस पूजी सब

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

केरी भूप बहुत जुटेरी भोर रामजी को राज है॥

मन्थरा—(श्वास लै) हाय राजा का यह छल रानी साहेब का रतीभर हाल न मालुम भा (हाय बिधाता अब का करौं) कौन तरह ये काम नशाय. और जो आज ना बिगरी तबौ नाहीं बनत हैं, अच्छा भरथमात से तो जनावों.

प्रथमाङ्क * दृश्य राजभवन

(सिंहासन पर केकयी विराजमान हैं श्वास लेते मन्थरा का प्रवेश)

केकयी—अरी मन्थरा रोती क्यों है ? क्या हुआ.

चौपाई (नेपथ्य)

उतर देय नहिंलेय उसासू । नारिचरित करि ढारत आँसू ॥

(मन्थरा का और ज़ोर से रोना)

केकयी— चौपाई

सबसन भिरत गाल बड़ तोरे । दीन्ह लखनसिखअसम नमोरे॥

(मन्थरा का फिर न बोलना)

केकयी—(घबराकर) दोहा

कहत नहीं कछु बैन तें, रोवत रूप बनाय।
कुशल राम महिपालहैं, भरत लखनसबभाय॥

मन्थरा— कवित्त

काको बल पायकर गाल धौं निहाल होउँ मेरे लाल को पठाय दीन्ह नानिहाल को। कौशला के बाल छाँड़ि कौन केहैं नीक हाल कै कुचाल मोहिं लीन जौन महीपाल को॥ सौत जौन जाल कीन तौन ना हवाल दीन सर्वकाल जानो वश आपने भुवाल को। होत शाल हीय बीच देखि कै बिशालपूर हाय भूप कालिह देहिं राज रामलाल को॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई

भयो कौशलहिबिधिअतिदाहिन। देखत गर्वरहतउर नाहिन॥
नींद बहुत प्रिय सेज तुराई। लखहु न भूप कपटचतुराई॥

चौपाई (नेपथ्य)

सुनप्रियबचनमलिनमनजानी। झुकीरानितबरहिअरगानी॥

केकयी—(झुंझलाकर) चुप चुड़ैल.

चौपाई

पुनि अस कबहुँ कहसि घर फोरी। तौ धरि जीह कढ़ावों तोरी॥

दोहा

काने खोरे कूबरे, कपट कुचाली जौन।
तिय विशेष पुनि चेरि ह्वै, आग लगावत भौन॥

चौपाई

प्राणते अधिक राम प्रिय मोरे। तिनके तिलक छोभ कस तोरे॥
प्रियवादिन सिखदीन्ह्यों तोहीं। स्वपनेहु तोपर कोप न मोहीं॥
सुदिन सुमङ्गलदायक सोई। तोर कहा फुर जादिन होई॥
जेठि स्वामि सेवक लघु भाई। यह दिनकरकुल रीति सदाई॥
रामतिलक जो साँचहु काली। देहुँ माँगु बर भावत आली॥
कौशल्या सम सब महतारी। रामहिं सहज स्वभाव पियारी॥
मोपर करहिं स्नेह बिशेखी। मैं करि प्रीति परीछा देखी॥

दोहा

भरतसपथ तोहिं सत्य कहु, परिहरि कपट दुराव।
हर्ष समय विस्मय करसि, कारण मोहिं सुनाव॥

मन्थरा— चौपाई

एकहि बार आस सब पूजी। अब कछु कहब जीह करदूजी॥
फोरै योग कपार अभागा। भलो कहत दुख रौरे लागा॥
कहै झूठ फुर बात बनाई। ते प्रिय तुम्हैं करू मैं माई॥
हमहुँकहब अबठकुरसुहाती। नाहिं तो मौन रहब दिनराती॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कोउ नृप होब हमैं का हानी । चेरि छाँड़ न कहावब रानी ॥
कर कुरूप बिधिपरवश कीन्हा । बाचा शाल हमैं तिन दीन्हा ॥
जारै योग स्वभाव हमारा । अनभल देखि न जायतुम्हारा ॥
ताते कछुक बात अनुसारी । क्षमब देवि बड़ि चूक हमारी ॥

दोहा (नेपथ्य)

गूढ़ कपट प्रिय बचन सुनि, तीय अधर बुध रानि ।
सुरमाया वश बैरिणी, सुहृद जान पतियान ॥

चौपाई

सादर पुनि २ पूछत ओही । शबरी गान मृगी जनु मोही ॥

केकयी—अरी सत्य २ बताव इसमें कारण कौन है तुझे मेरी सौंह.

चौपाई (नेपथ्य)

सजप्रतीत गढ़ बहुविधि छोली । अवध साढ़साती जनुबोली ॥

मन्थरा—का बार २ पूछत हौ.

कवित्त

पूछतीहौ रानी मोसौं हौंतो डरपानी तोसौं कूबरी औौ कानी कहि खूब सन्मानी है । प्रीति तो पुरानी तुम राम की बखानी तौन वह तो हेरानी समै अबकी न जानी है ॥ पूर इन मानी रबि प्रीति हुलसानी फूली छार होत पानी वह रीतिहू हेरानी है । नारि सब आप सम जानिके भुलानी फिरै सौत की न आनी मन काह ठहरानी है ॥

दोहा

तुमहिं न शोच सुहाग बल, निज वश जानहु राव ।
मन मलीन मुख मीठ नृप, राउर सरल सुभाव ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

केकयी— दोहा

तुमहिं शपथ सुत भरत की, सत्य कहो समुझाय।
रामतिलक जो होय तो, मोहिं कौन दुखदाय॥

मन्थरा— कवित्त

आजलौं न जानी तुम कैसीहौ देवानी रानि हेत अनहेत निजको न पहिचानी है। राज मनमानी जौन सौत ना सुहानी तौन बीचपाय ठानी राम हेत राजधानी है॥ भूपति बखानी नाहिं बातको बितानी पाख मेरे मुख सुनपाई आज या कहानी है। खाँव पियों रानी मैं तुम्हारो अन्नपानी नित्य सत्य कहेबानी तो न होत रञ्च हानी है॥

चौपाई

जो असत्य कछु कहब बनाई। तो बिधि देइह मोहिं सजाई॥
रामहिंतिलक कालिह जोभयऊ। तुमकहँबिपतबीज बिधिबयऊ॥
रेख खचाय कहौं बल भाखी। भामिन भइउ दूधकी माखी॥
जो सुत सहित करौ सेवकाई। तौ घर रहहु न आन उपाई॥

दोहा

कद्रू बिनतहिं दीन्ह दुख, तुमहिं कौशिला देव।
भरत बन्दिगृह सेइहैं, राम लखन के नेव॥

चौपाई (नेपथ्य)

केकयसुता सुनत कटुबानी। कहिनसकत कछु सहमिसुखानी॥

केकयी— सवैया

जानि परी फुर बात तुम्हार नितै फरकै मम दाहिन आँखी। देखहुँ रोज बुरे सपना पर भोरपने से कवौं नाहिं भाखी॥ शत्रु औ मित्र न जान परै मोहिं सूधो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुभाव कहौं शिव साखी। आजलौं काज बिगार्यों न काहु को बैर केहू सँग में नहिं राखी ॥

दोहा

अपने चलत न आजलगि, अनभल काहु को कीन्ह।
केहि अघ एकहिबार मोहिं, दैव दुसह दुख दीन्ह ॥

चौपाई

नैहर जन्म भरब बरु जाई। जियत न करब सौति सेवकाई॥

चौपाई (नेपथ्य)

दीन बचन कह बहुबिधिरानी। सुनि कुबरी तियमाया ठानी॥

मन्थरा— चौपाई

अस कस कहहु मानि मनऊना। सुखसुहाग तुमकहँ दिनदूना॥
भामिन कहौं सो करौं उपाऊ। हैं तुम्हरी सेवाबश राऊ॥

केकयी— दोहा

परौं कूप तौं बचन लगि, सकौं पूतपति त्याग।
कहसि मोर दुख देखि बड़, कस न करब हितलाग॥

मन्थरा— चौपाई

तुमहिं कछू सुधि अहैकि नाहीं। भामिनकह्यो कथा मोहिंपाहीं॥
द्वै वरदान भूप सन थाती। माँगहु आज जुड़ावहु छाती॥
सुतहि राज रामहिं बनबासू। देहु लेहु सब सवति हुलासू॥
भूपति राम शपथ जब करहीं। तब माँगेहु जेहिबचन न टरहीं॥
होयअकाज आज निशिबीते। बचन मोर प्रिय मानहु जीते॥

दोहा

नृप आवन की बेर है, उठौ कोपगृह जाव।
काज सँवारेहु सजग ह्वै, सहसा जनि पतियाव॥

केकयी—अरी मन्थरा तू मेरी बड़ी मित्र है और बड़ी चतुर है मुझे शोकसागर में डूबते से निकाला परन्तु.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई

जो बिधि पुरव मनोरथ काली। करौं तोहिं चखपूतरिआली॥

(केकयी का सहित मन्थरा प्रस्थान)

दोहा (नेपथ्य)

साँझि समय सानन्द नृप, गयो केकयी गेह।
गवन निठुरता निकट किय, जनु सनेह धरि देह॥

प्रथमाङ्क * दृश्य केकयी राजभवन

(राजा का आय सूनी शय्या देखना.)

दशरथ--(घबराकर) क्यों री मैना मेरी प्राणप्यारी कहां गई जो सेज सूनी है.

मैना—महाराज रानी साहेब तो कोप का साज साज कोपभवन में विराजमान हैं.

दशरथ—कोप का कारण.

मैना—महाराजा मैं ना जानों.

चौपाई (नेपथ्य)

कोपभवन सुनि सकुचे राऊ। भयवश आंगे परै न पाऊ॥
सुरपति बसे बाहुबल जाके। नरपति सकल रहहिं रुखताके॥
सो सुनि तिय रिस गये सुखाई। देखहु काम प्रताप बड़ाई॥

प्रथमाङ्क * दृश्य कोपभवन

चौपाई (नेपथ्य)

सभय नरेश प्रियापहँ गयऊ। देखि दशा दारुण दुख भयऊ॥

(केकयी का मलिन वस्त्र धारण करि आभूषण त्यागि भूमि में शयन करना राजा का प्रवेश केकयी के ऊपर हाथ धरना केकयी का झुँझलाना और झिटक देना)

दशरथ— पद

कौनसों कार्य्य रिसानी हो प्रिया तुम। गजगामिन भामिन मुख बोलो अनहिततों किन ठानी हो प्रिय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तुम ॥ कौनसों० ॥ कौनचहै यमपुर पुर देखन काकी आयु खुटानी हो प्रिया तुम ॥ देहुँ आज केहि रंक राजपद हरहुँ कौन रजधानी हो प्रिया तुम ॥ पुरजन प्रजा सकल बश तोरे सुत बित औ सब रानी हो। सुमुख सुलोचनि भूषण साजो भौंहैं रहीं कैसे तानी हो प्रिया तुम ॥ तव मुख चन्द्रचकोरि रहौं मैं बिन तव जीवन हानी हो प्रिया तुम ॥ बिनहिं काज कत रिसकर बैठी माँगहु जो मनमानी हो प्रिया तुम ॥ जो कछु कहौं कपट कर तोहीं शपथ राम मैं आनी हो प्रिया तुम ॥ कौनसों काज रिसानी हो ॥

दोहा (नेपथ्य)

यह सुनि मन गुनि शपथ बड़ि, बिहँसउठी मतिमन्द।
भूषण सजत बिलोकि मृग, मनहुँ किरातिन फन्द ॥

चौपाई

पुनि कह राव सुहृद जियजानी। प्रेम पुलकि मृदु मञ्जुल बानी ॥

दशरथ— सवैया

मङ्गल माहिं अमङ्गल मानके मानकियो मन काह लई है। साज सिंगार सुलोचन साज सो अंग सँवारले सारी नई है ॥ भौंहैं कमानसी तान नहीं मन भावत भामिन बात भई है। बाजत बाज बधाव बराबर भोरहिं राम को राज दई है ॥

चौपाई

कपट सनेह बढ़ाय बहोरी। बोली बिहँसि नयन मुखमोरी ॥

केकयी— दोहा

माँगु माँगु बहु कहहु पिय, कबहूँ देहु न लेहु।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देन कह्यो बरदान द्वै, तेउ पावत संदेहु ॥

दशरथ—(हँसकर) वाह वाह, इतने के वास्ते इतना कोप ले अब जान गया उठो २ यह कोप क्या तुम्हारा खेल है.

चौपाई

जान्यो मर्म झूँठि रिस रहई । तुमहिं कोहाब परमप्रिय अहई ॥
थाती राखि न माँग्यो काऊ । बिसरि गयो मम भोर स्वभाऊ ॥
झूँठहि हमैं दोष जनि देहू । द्वै के चार माँगि किन लेहू ॥
रघुकुल रीति सदा चलिआई । प्राण जायँ बरु बचन न जाई ॥
तेहि पर रामशपथ करुवाई । सुकृत सनेह अवध रघुराई ॥

समाजी (नेपथ्य)

बात दृढ़ाय कुमति हँसि बोली । कपट बिहंग कुलह जनु खोली ॥

केकयी— चौपाई

सुनहु प्राणपति भावत जीका । देहु एक बर भरतहि टीका ॥
बर दूसर माँगहुँ कर जोरी । पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी ॥
तापस बेष विशेष उदासी । चौदह वर्ष राम बनबासी ॥

चौपाई (नेपथ्य)

सुनिमृदुबचन भूपहिय शोकू । शशिकर छुवत बिकल जनु कोकू ॥
माथे हाथ मूँदि दोउ लोचन । तनु धरि शोचलागि जनुशोचन ॥

दशरथ—(श्वास लै)

चौपाई

मोर मनोरथ सुरुतरु फूला । फरतकरिणि जिमि हत्योसमूला ॥
अवध उजार कीन्ह कैकेयी । दीन्हेसि अचल बिपति कै नेयी ॥

दोहा

कौने औसर का भयो, गयों नारि बिश्वास ।
योगसिद्धि फल समय जिमि, यतिहि अविद्यानास ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

केकयी— सवैया

मोहिं मँगायहु मोल महीपति का सुत मोर न पूत तुम्हारे। बोलेहु बात बिचारि न क्यों हिय बाणसे बैन जो लाग हमारे॥ सूरजबंश में सत्य सराहेहु सो सब का बर साथ सिधारे। देन कह्यो अब देहु न सो नृप दानी कि देह बृथा तुम धारे॥

चौपाई

सत्य सराहि कह्यो बरदेना। जानेहु लेइहि मांगि चबेना॥

चौपाई (नेपथ्य)

बोल्यो राव कठिन करि छाती। बयन सबिनै न ताहि सुहाती॥

दशरथ— चौपाई

प्रिया बचन कस कहत कुभांती। रीति प्रतीति प्रीति करि घाती॥
अवशि दूत पठवब मैं प्राता। ऐहैं बेगि सुनत द्वौ भ्राता॥
सुदिन शोधि सब साज सजाई। देहौं भरतहिं राज बजाई॥

दोहा

लोभ न रामहिं राज कर, बहुत भरत पर प्रीति।
मैं बड़ छोट बिचार जिय, करत रह्यों नृपनीति॥

चौपाई

रामशपथ सत कहौं सुभाऊ। राममातु कछु कह्यो न काऊ॥
मैं सब कीन्ह तोहिं बिन पूछे। ताते परे मनोरथ छूँछे॥
रिसि परिहरि अब मङ्गल साजू। कछु दिन गये भरत युवराजू॥

कवित्त

मङ्गल शुभ साज २ करिके समाज आज करिहौं युवराज भरत प्रात होन देरी। दूसर बरदान से तो जान जाय जान प्रिया सत्यहि यह बान है कि मान में कहेरी॥ नित्त तौ सराहत थी चाहत हैं मोहिं राम कौने

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अपराध से कठोर हिय करेरी । जियहि मीन जल बिहीन मणि बिन फणि जियहि दीन राम के बियोग मैं जियों न नेक देरी ॥

दोहा

प्रिया हांसि रिस परिहरहु, माँगु बिचार बिबेक।
जेहि देखौं अब नयन भरि, भरत राज अभिषेक॥

केकयी— चौपाई

कहौ करौं किन कोटि उपाया। यहां न लागहि रावर माया ॥
देहु कि लेहु अयश करि नाहीं। मोहिं न बहु परपञ्च सुहाहीं ॥
राम साधु तुम साधु सयाने। राममातु भल सब पहिचाने ॥
जस कोशला मोर हित ताका। तस फल देहुँ उन्हें करि शाका ॥

दोहा

होत प्रात मुनिबेष धरि, जो न राम बन जाहिं।
मोर मरण रावर अयश, नृप समझहु मन माहिं॥

चौपाई (नेपथ्य)

लखी नरेश बात सब सांची। तिय मिस मीच शीश पर नाची ॥
गहि कर भूप निकट बैठारी। बार बार बहु बिनय उचारी ॥

दशरथ— सवैया

मांगले माथ तो देउँ अबै मोहिं मार न भामिनि बैन के घावरी। और जो चाह सो मांगु प्रिया पर राम को ना बनबास पठावरी॥ काटन को कुल सूरज के कुलहरी सम काहे को होत है बावरी। माष न नाहक राखिले रामहिं जैसे बनै प्रिय मोहिं जियावरी ॥

(राजा का शिर पीट पृथ्वी पर गिरना)

केकयी— चौपाई

जो अन्तहि अस करतब रहेऊ। मांगु मांगु पिय केहि बल कहेऊ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

द्वै कि होहिं यक सङ्ग भुवालू। हँसब ठठाय फुलाउब गालू॥
छांड़हु बाच कि धीरज धरहू। जनि अबला इव कारण करहू॥
दीन दान फिर मांगहु राजा। परिहरि लोक बेद की लाजा॥

दशरथ— दोहा

कटुक कहत तौ केकयी, कछुक दोषनहिं तोर।
लागेहु तोहिं पिशाच जिमि, काल कहावत मोर॥

रेखता

कैसी कठोर केकयी तू हाय हाय हाय। क्यों मारती है बाण मेरे धाय धाय धाय॥ अभिलाष तेरे जी की रहै जीही में कुटिला। सेवैंगे भरत राम को सह भाय भाय भाय॥ तेरा कलंक मेरा ये पछिताव जन्म भरि। वेदो पुराण सबहि कहैं गाय गाय गाय॥ करले जो मन में तेरे हो पापिन तु पाप को। आंखों के ओट बैठ मेरे जाय जाय जाय॥ जब तक जियों न बात कुछ अब मुख से बोलियो। मारा है तू ने सिंह के हित गाय गाय गाय॥ पछितायगी तू अन्त में अबला अभागिनी। थूकेंगे सभी मुँह प तेरे आय आय आय॥

हा राम, हा राम, हा राम, हा राम!

प्रथमाङ्क * दृश्य राजदरबार

(वशिष्ठ सुमन्तादि एकत्र बैठे हैं)

वशिष्ठ—(सुमन्त से)

चौपाई

पिछले पहर भूप नित जागा। आजु हमैं बड़ अचरज लागा॥
जाहु सुमन्त जगावहु जाई। कीजिय काज रजायसु पाई॥

सुमन्त—बहुत अच्छा स्वामी।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रथमाङ्क ❀ दृश्य कोपभवन

(सुमन्त का केकयी भवन जाय और सूना पाय सबसे पूँछि कोपभवन जाना)

(राजा को मूर्च्छित देख और केकयी को समीप बैठी देख सुमन्त का सूखि जाना)

केकयी—सुमन्त जैसे आप शोक में हो गये इसी तरह मैं भी शोकमें पड़ी हूं राजा को रात भर नींद नहीं पड़ी और हा राम, हा राम ! रटते रहे कुछ मर्म न जान पड़ा—अब

चौपाई

आनहु रामहिं वेगि बुलाई। समाचार तब पूँछेहु आई॥

सुमन्त—जान पड़ता है कि इसमें कुछ रानी साहेब का कुचाल है देखूं अब रामको बोलाकर क्या करैंगी—सुमन्त का राम समीप जाय समाचार सुनाय कोपभवन में लाना।

दोहा (नेपथ्य)

जाय दीख रघुबंशमणि, नरपति निपट कुसाज।
सहमिपरयो लखि सिंहिनिहिं, मनहुँ बृद्ध गजराज॥

चौपाई

करुणामय मृदु राम सुभाऊ। प्रथम दीख दुख सुना न काऊ॥
तदपि धीर धरि समय बिचारी। पूछा मधुर बचन महतारी॥

राम— चौपाई

मोहिं कहु मात तात दुखकारण। करिय यत्न जेहि होहि निवारण॥

केकयी— सवैया

सांची कहौं सुनिये रघुनन्दन शोक को कारण एक यही है। देन कह्यो नृप द्वै बरदान सो मांगेहुँ मैं चित जौन रही है॥ राज सुतै बनबास तुम्हैं सुनिकै यह

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भूपति मौन गही है। छांड़ि सकैं न तुम्हार सकोच भयो सोइ शोच न जात कही है॥

दोहा

सुतसनेह इत बचन उत, संकट पर्‌यो नरेश।
सकहु तो आयसु शीशंधरि, मेटहु कठिन कलेश॥

राम— चौपाई

सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी। जो पितुमातु चरण अनुरागी॥

दोहा

मुनिगन मिलन बिशेष बन, सबहिं भांति भल मोर।
तेहि महँ पितुआयसु बहुरि, सम्मत जननी तोर॥

चौपाई

भरत प्राण प्रिय पावहिं राजू। बिधिसबबिधिमोहिंसन्मुखआजू॥
जो न जाउँ बन ऐसेहु काजा। प्रथम गनेहु मोहिं मूढ़समाजा॥
थोरेहु बात पितहिं दुख भारी। होत प्रतीति न मोहिं महतारी॥
राउ धीर गुण उदधि अगाधू। भा मोते कछु बड़ अपराधू॥
ताते मोहिं न कहत कछु राऊ। मोर शपथ तोहिं कह सतभाऊ॥

चौपाई (नेपथ्य)

रहसी रानि राम रुख पाई। बोली कपट सनेह जनाई॥

केकयी— चौपाई

शपथ तुम्हार भरत की आना। हेतु न दूसर मैं कछु जाना॥

दोहा (नेपथ्य)

गइ मूर्च्छा रामहिं सुमिरि, नृप फिरि करवट लीन्ह।
सचिव राम आगमन कहि, बिनय समय सम कीन्ह॥

(राजा का श्वास ले राम राम कहि करवट लेना)

सुमन्त—(हाथ जोरि) महाराज! रामचन्द्र आपको प्रणाम करते हैं।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(राजा का राम को प्रणाम करते देखि शीघ्र उठि गोद में बैठारि लेना)

चौपाई (नेपथ्य)

बिधिहिं मनाव राउ मन माहीं। जेहि रघुनाथ न कानन जाहीं॥

राम— चौपाई

तात कहौं कछु करौं ढिठाई। अनुचित छमब जानि लरिकाई॥
अति लघु बात लागि दुखपावा। काहेन कहि मोहिंप्रथम जनावा॥
आयसु पालि जन्म फल पाई। अइहौं बेगिहि होहि रजाई॥
बिदा मातु सन आवों माँगी। चलिहौं बनहिं बहुरि पगलागी॥

चौपाई (नेपथ्य)

अस कहि रामगवन तब कीन्हा। भूप प्रेमबश उतर न दीन्हा॥
नगर ब्यापि गइ बात सो तीछी। छुवत चढ़ी जनु सब तनु बीछी॥
जो यह सुनै धुनै शिर सोई। बड़ बिषाद नहिं धीरज होई॥
भल बनाय बिधि बात बिगारी। सबमिलिदेहिं केकयिहिगारी॥

प्रथमाङ्क * दृश्य मार्ग

(अनेक पुरवासियों का परस्पर वार्त्ता करना)

एक पुरवासी— सवैया

का यहि पापिनि सूझि परी, जिन छाय के भौन पै आग धरी है। काढ़ि के नैन निहारन चाहत छांड़ि सुधा बिष पान करी है॥ काटत वृक्ष को बैठिके पालव छावत शोक अनन्द घरी है। माँगत राम को बास बनै कसना रसना कटि भूमि परी है॥

अन्य पुरवासी— दोहा

काह न पावक जरि सकै, काह न सिन्धु समाय।
का न करै अबला प्रबल, केहि जग काल न खाय॥

चौपाई

भायू यह भल भूप न कीन्हा। बर बिचार नहिं कुमतिहिदीन्हा॥
जोहठभयो सकल दुख भाजन। अबला बिबशज्ञानगुणगाजन॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्य पुरवासी— सवैया

प्राण समान सदा यहि राम सो कारण कौन कठोर बनी है। देखहु नारि सुभाव सबै कस राव के घाव कुठाँव हनी है॥ दोष नहीं अवधेश नरेशहि बात को बंश दिनेश धनी है। राज समय बनबास दियो चतुरानन की यह चूक घनी है॥

चौपाई (नेपथ्य)

अति बिषाद सब लोग लुगाई। गये मातु पहँ राम गुसांई॥
रघुकुलतिलक जोरि दोउ हाथा। मुदित मातु पद नायहु माथा॥

प्रथमाङ्क * दृश्य राजभवन

(कौशल्या सखिनयुत विराजमान हैं राम का प्रवेश. प्रणाम करना माता का हृदय से लगाना)

कौशल्या— चौपाई

कहौं तात जननी बलिहारी। कबहिं लगन मुद मङ्गलकारी॥
तात जाउँ बलि बेगि नहाऊ। जो मन भाव मधुर कछु खाऊ॥
पितु समीप तब जायहु भैया। भै बड़ि बेर जाय बलि मैया॥

राम— चौपाई

पिता दीन्ह मोहिं कानन राजू। जहँ सब भाँति मोर बड़ काजू॥
आयसु देहु हर्षि हिय माता। जोइ मुद मङ्गल कानन जाता॥
जनि सनेहबश डरपसि मोरे। आनँद अम्ब अनुग्रह तोरे॥

दोहा

बर्ष चार दश बिपिन बासि, करि पितु बचन प्रमान।
आइ पायँ पुनि देखिहौं, मन जनि करसि मलान॥

चौपाई (नेपथ्य)

बचन बिनीत सुनत रघुबर के। शर सम लगे मातु उर करके॥
धरि धीरज सुत बदन निहारी। गदगद बचन कहत महतारी॥

कौशल्या— चौपाई

तात पितहि तुम प्राणपियारे। देखि मुदित नित चरित तुम्हारे॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राज देन कहँ शुभ दिन साधा। कहेव जान बन केहि अपराधा॥
तात कहौ यह मोहिं निदानू। को दिनकर कुल भयो कृशानू॥
तात जाउँ बलि कीन्ह्यो नीका। पितु आयसु सब धर्म को टीका॥

दोहा

राज देन कह दीन बन, मोहिं न शोच लवलेश।
तुम बिन भरतहि भूपतिहि, प्रजहि प्रचण्ड कलेश॥

चौपाई

जो केवल पितु आयसु ताता। तौ जनि जाहु जाय बलि माता॥
जो पितु मातु कहैं बन जाना। तौ कानन शत अवध समाना॥
जाहु सुखेन बनहिं बलि जाऊँ। करि अनाथ जन परिजन गाऊँ॥

चौपाई (नेपथ्य)

अस कहि चरन परी लपटानी। परम अभागिनि आपुहि जानी॥
राम उठाय मातु उर लाई। कहि मृदु बचन बहुरि समुझाई॥

राम—हे माता! आप प्रेम में शोकित न हों मैं शीघ्रही पिता की आज्ञा पूर्ण कर आपके चरण देखूँगा।

दोहा (नेपथ्य)

समाचार तेहि समय सुनि, सीय उठी अकुलाय।
जाय सासुपदकमल युग, बन्दि बैठि शिरनाय॥

(जानकी का प्रवेश)

जानकी—(स्वतः)

चौपाई

चलन चहत बन जीवननाथा। केहि सुकृती सन ह्वैहै साथा॥
की तनु प्राण कि केवल प्राना। विधि करतब कछु जात न जाना॥

कौशल्या—

चौपाई

तात सुनहु सिय अति सुकुमारी। सासु ससुर परिजनहिं पियारी॥

दोहा

पिता जनक भूपालमणि, ससुर भानुकुलभान।
पति रबिकुलकैरवबिपिन, बिधु गुणरूपनिधान॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई

पलँग पीठ तजि गोद हिंडोरा। सिय न दीन्ह पग अवनि कठोरा ॥
सो सिय चलन चहत बन साथा। आयसु काह देत रघुनाथा ॥
जो सिय भवन रहहिं कहि अम्बा। मो कहँ बहुत होइ अवलम्बा ॥

चौपाई (नेपथ्य)

सुनि रघुबीरमातु प्रिय बानी। शील सनेहसुधा रस सानी ॥

दोहा

कहि प्रिय बचन बिबेकमय, कीन्ह मातु परितोष।
लगे प्रबोधन जानकिहिं, प्रकटि बिपिन गुण दोष ॥

राम—(जानकी से)

चौपाई

राजकुमारि सिखावन सुनहू। आन भाँति जनि जिय कछु गुनहू ॥
आपन मोर नीक जो चहहू। बचन हमार मानि घर रहहू ॥
आयसु मोर सासु सेवकाई। सब बिधि भामिनि भवन भलाई ॥
जब जब मातु करैं सुधि मोरी। ह्वैहै प्रेम बिबश मति भोरी ॥
तब तब तुम कहि कथा पुरानी। समुझायहु सुन्दरि मृदुबानी ॥
कहौं सुभाव शपथ शत मोहीं। सुमुखि मातु हित राखौं तोहीं ॥
जो हठ करहु प्रेमबश बामा। तौ तुम दुख पावब परिणामा ॥

और हे प्रिये ! बन में बहुत बड़े दुःख हैं।

चौपाई

कानन कठिन भयंकर भारी। घोर घाम हिम बारि बयारी ॥
कन्दर खोह नदी नद नारे। अगम अगाध न जाहिं निहारे ॥
भालु ब्याघ्र बृक केहरि नागा। करहिं नाद सुनि धीरज भागा ॥

दोहा

भूमि शयन बलकल बसन, असन कन्द फल मूल।
सो कि सदा सब दिन मिलहिं, समय समय अनुकूल ॥

चौपाई

रहहु भवन अस हृदय बिचारी। चन्द्रबदनि दुख कानन भारी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोहा

सहज सुहृद गुरु स्वामि सिख, जो न करै हित मानि।
सो पछिताय अघाय उर, अवशि होय हित हानि॥

चौपाई (नेपथ्य)

सुनि मृदु बचन मनोहर पियके। लोचन नलिन भरे जल सिय के॥

जानकी—(सासु से)

चौपाई

दीन्ह प्राणपति मोहिं सिख सोई। जेहि बिधि मोर परम हित होई॥
मैं पुनि समुझि दीख मन माहीं। पिय बियोग सम दुखजग नाहीं॥

(रामचन्द्र से)

पद

प्राणनाथ तुम बिनु नहिं जग में मो कहँ कोइ सुखदाई है। सासु ससुर पितु मातु कुटुँब सब निज हित नात लगाई है॥ बिन पति बिपति सकल जग ब्यापित कहत सबै कबि गाई है। जो तुम जाव प्राण सँग पठवौं मन में यह ठहराई है॥

प्राण नाथ तुम बिनु०॥

दोहा

राखिय अवध जो अवधि लग, रहत जानिये प्रान।
दीनबन्धु सुन्दर सुखद, शीलसनेहनिधान॥

चौपाई (नेपथ्य)

देखि दशा रघुनायक जाना। हठ राखे राखहिं नहिं प्राना॥

राम— चौपाई

तजहुशोचजनिमींजहुलोचनि। चलहुसंगबनसुमुखिसुलोचनि॥

चौपाई (नेपथ्य)

समाचार जब लछिमन पाये। ब्याकुल बदन बिलखि उठि धाये॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(लक्ष्मणजी का प्रवेश राम के चरणों पर गिर नेत्रों में जलभरि हाथजोड़ कहना)

लक्ष्मण-- चौपाई

मोकहँ काह कहत रघुनाथा। रखिहौ भवन कि लेहौ साथा॥

राम--(लखन से)

चौपाई

भवन भरत रिपुसूदन नाहीं। राव वृद्ध ममदुख मनमाहीं॥
मैं बन जाउँ तुम्हैं लै साथा। ह्वैहै सब बिधि अवध अनाथा॥
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू। सब कहँ परहि दुसह दुख भारू॥
रहहु करहु सबकर परितोषू। नतरु तात ह्वैहै बड़दोषू॥

दोहा (नेपथ्य)

उतर न आवत प्रेमवश, गह्यो चरन अकुलाय।
लोचन जल ढारत महा, कह्यो बचन बिलखाय॥

लक्ष्मण— कवित्त

मेरे तो तुमहिं तात दूसरो न पिता मात एते दिन स्वामि को बियोग कैसे सहिहौं। मन बच कर्म नित रहत चरणरत कृपानिधि छोड़ौगे तो कैसे निरबहिहौं॥ जाको यश चाहै तौन नीति को निबाहै नेकु तेरी मैं शरण छांड़ि बाहँ काकी गहिहौं। हाथगहि सेवक को साथ नाहिं लेहौ नाथ क्षणभर ह्वैके ना अनाथ औंध रहिहौं॥

राम— चौपाई

मांगहु बिदा मातु सन जाई। आवहु बेगि चलहु बन भाई॥

लक्ष्मण--बहुत अच्छा स्वामी।

चौपाई (नेपथ्य)

जाय जननिपद नायहु माथा। मन रघुनन्दन जानकिसाथा॥
पूँछा मातु मलिन मन देखी। लखन कही सब कथा बिशेखी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रथमाङ्क * दृश्य राजभवन

(सुमित्रा सखिनयुत विराजमान हैं लक्ष्मणजी का प्रवेश प्रणाम करि हाथ जोरि खड़े होना)

सुमित्रा—पुत्र ! आज तुम्हारा मुख मलीन क्यों है ?

लक्ष्मण—माता ! आज बड़ी अनर्थ की बात हो गई.

सुमित्रा—(डरकर) अनर्थ कैसा.

लक्ष्मण—माता केकयी ने पिता से दो बरदान रामचन्द्र को बनबास और भरतजी का राज मांगा है सो रामचन्द्र जनकदुलारी समेत बन को जाते हैं—मैं भी.

चौपाई (नेपथ्य)

गई सहमि सुनि बचन कठोरा । मृगी दीख जनुदव चहुँ ओरा ॥
धीरज धर्यो कुऔसर जानी । सहज सुहृद बोली मृदु बानी ॥

सुमित्रा— चौपाई

जो सुत राम सिया बन जाहीं । अवध तुम्हार काज कछु नाहीं ॥
तात तुम्हार मातु बैदेही । पिता राम सब भांति सनेही ॥
अस जिय जानि संग बन जाहू । लेहु तात जग जीवनलाहू ॥
जेहि न राम बन लहहिं कलेशू । सुत सोइ करेहु यहै उपदेशू ॥

(लक्ष्मणजी का प्रस्थान)

प्रथमाङ्क * दृश्य कोपभवन

(नेपथ्य)

बन्दि रामसियचरण सुहाये । चले संग नृपमन्दिर आये ॥

(राजा मूर्च्छित पड़े हैं केकयी समीप बैठी है राम लखन जानकी का प्रवेश)

सुमन्त—महाराज ! रामचन्द्र आपको प्रणाम करते हैं

(राजा का उठना सुमन्त का पीछे सहारा देकर बैठालना राम का हाथ जोड़ कहना)

राम— चौपाई

पितु अशीश आयसु मोहिं दीजै । हर्ष समय बिसमय जनि कीजै ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(राजा का कुछ उत्तर न देना)

केकयी—(पट देकर) पुत्र ये मुनिपट लेकर धारण करो राजा तो बृद्ध होगये इन को कुछ यश अयश का बिचार नहीं है और न ये अपने मुख से कुछ कहैंगे।

दशरथ—(स्वतः) हाय इसके बाणइव बचन हृदय को बिदीर्ण करते हैं परन्तु प्राण नहीं निकलते।

(राजा का मूर्च्छित हो गिरना और राम लखन का मुनिपट धारण करि जाना)

चौपाई (नेपथ्य)

गइ मूर्च्छा तब भूपति जागे। बोलि सुमन्त कहन अस लागे ॥

दशरथ— दोहा

सुठि सुकुमार कुमार दोउ, जनकसुता सुकुमारि।
रथ चढ़ाय देखराय बन, फिरेहु गये दिन चारि ॥

चौपाई

जो नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई। सत्यसिन्धु दृढ़ ब्रत रघुराई ॥
तौ तुम बिनय करब कर जोरी। फेरिय प्रभु मिथिलेश किशोरी ॥
यहि बिधि करहु उपाय कदम्बा। फिरै तो होय प्राण अबलम्बा ॥
नाहिं तो मोर मरण परिणामा। कछु न बिसाय भयो बिधिबामा ॥

(सुमन्त का प्रस्थान)

प्रथमाङ्क * दृश्य राजद्वार

(राम लखन जानकी का बन साज से तैयार होना सुमन्त का हाथ जोर कहना)

सुमन्त—कुवँर राजा की आज्ञा है रथ पर चढ़ि यात्रा कीजिये.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राम—बहुत अच्छा.

(रथपर चढ़ि राम लखन का पयान पुरबासियों का रोते हुए रामचन्द्र के साथ जाना)

पुरबासी— लावनी

जो हमैं छोड़ के आप बिपिन पग धारे।
हम किसके होकर रहैं अवध में प्यारे॥

विधना ने हमको दिया दुःख अति भारी। हनि दई करेजे बीच कटारी कारी॥ हा कैकेयी मतिमन्द अक़ल तौं मारी। सुख औसर पठवत बनै सिया सुकुमारी॥
हाय लई बिपति ने घेरि मिटे सुख सारे।
हम किसके होकर रहैं अवध में प्यारे॥

इस पापिन ने करदिया अवध अँधियारा। क्या सुन्दर छाया भवन आगि धरि बारा॥ जाता है बनको आज हमारा प्यारा। है सबको जीवन विना नाथ धिक्कारा॥
घरबार डसै है हमैं नाग जिमि कारे।
हम किसके होकर रहैं अवध में प्यारे॥

यौं हमैं छोड़ मँझधार चले क्यों जाते। हम सब को हौ अवलम्ब कौन बतलाते॥ यह दुख की नदी अथाह बहे हैं जाते। सब डूबैं पुर नर नार पार नहिं पाते॥
यह कौन लगावै नाव नाथ कीनारे।
हम किसके होकर रहैं अवध में प्यारे॥

प्रभु सबको सेवक जान साथ में लीजे। हम माँगत हैं कर जोरि दान यह दीजे॥ बस के अब अवध उजार काज का कीजे। जो प्राण नाथ बन जाहिं यहाँ तनु छीजे॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हौ दीनन के तुम नाथ दीन हम भारे।
कहो किसके होकर रहैं अवध में प्यारे॥

राम—हे पुरबासियो ! तुम लोग अब लौट जाव हम चौदह बर्ष ब्यतीत कर शीघ्रही फिर तुम लोगों से मिलैंगे.

पुरबासी—नाथ अब अवध में हमारा क्या है जहाँ आप वहाँ अवध हम कदापि न लौटेंगे.

राम—(स्वतः) बड़े असमञ्जस की बात है ये पुरबासी मेरे बिरह में बिकल हैं.

द्वितीयाङ्क * दृश्य तमसा नदी

(राम लखन जानकी का सब पुरबासियों समेत तमसा तीर पहुँचना और सबका नदी तट पर सो जाना)

राम—(सबको सोते देखि) सुमन्त तुम इस समय रथ जोतकर इस प्रकार हाँको कि जिसमें पुरबासियों को रथ की लीक न मिलै नहीं तो ये हमारा साथ न छोड़ेंगे.

(सुमन्त का रथ पर राम लखन जानकी को चढ़ाय ले जाना और पुरबासियों का जाग रघुनाथजी को न देख बिकल हो रो पीटकर अयोध्या लौट जाना)

द्वितीयाङ्क * दृश्य शृंङ्गबेरपुर

चौपाई (नेपथ्य)

सीता सचिव सहित दोउ भाई। शृङ्गबेरपुर पहुँचे जाई॥
यह सुधि गुह निषाद जब पाई। मुदित लिये प्रिय बंधु बुलाई॥

(निषाद दो चार गुहकों सहित बैठा है एक गुह का प्रवेश)

गुह—दादा ओ दादा देखौ एक लढ़िया पर दुइ बाबा और एक बबाइन तौम गंग के किनारे आये हैं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अरे दादा भल नीक लागत हैं—और दादा लढ़िया मां घोड़ नहे हैं चलौ दादा तनिक देखौं तौ.

निषाद—चुप सारे भगवान् है हैं जा सबका बोलाय लाव तो चली.

चौपाई (नेपथ्य)

लै फल मूल भेंट भरि भारा। मिलन चल्यो हिय हर्ष अपारा॥

(राम लखन जानकी सुमंत्युत गंगातट पर विराजमान हैं निषाद का प्रवेश भेंट आगे धरि हाथ जोरि खड़ा होना)

राम—कहो भाई निषाद कुशल तो है तुम्हारे परिवार वाले अच्छे हैं.

निषाद— कवित्त

सह परिवार ये निहार चरणारबिन्दु, ताबेदार कुशल सदाही सरकार है। घर बार धाम द्वार पुर परिवार सब, सो तो मोर नाहीं नाथ सबही तुम्हार है॥ सेवक बिचार भौन धार पग तार दीजै, लीजिये उतार मेरे शीश पापभार है। करिके अपार कृपा चलिये कुमार दोऊ, कीजिये अहार साग पात जो हमार है॥

राम— चौपाई

कह्यो सत्य तुम सखा सुजाना। मोहिं दीन्ह पितु आयसु आना॥

दोहा

बसहुँ बिपिन मुनि बेष धरि, करि फल मूल अहार।
ग्रामबास नहिं उचित मोहिं, सखा बर्ष दशचार॥

चौपाई (नेपथ्य)

तब निषादपति उर अनुमाना। तरु शिंशपा मनोहर जाना।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

निषाद—अच्छा स्वामी जो आपकी यही इच्छा है तो यह सीसम का वृक्ष बड़ा सुन्दर है यहाँ ही बास कीजिये.

राम—वाह सखा यह तो बड़ा सघन और पवित्र वृक्ष है हम यहां ही बास करेंगे.

चौपाई (नेपथ्य)

गुह सँवारि साथरी डसाई। कुश किसलयमय मृदुल सुहाई॥
शुचि फल मधुर मृदुल जिय जानी। दोना भरि भरि राखेसि आनी॥

दोहा

सिय सुमन्त भ्राता सहित, कन्द मूल फल खाय।
शयन कीन्ह रघुवंशमणि, पायँ पलोटत भाय॥

(रघुनाथजी को सहित जानकाजी के कुश साथरी पर सोते जानकर लक्ष्मणजी का धनुष बाण ले कुछ दूरि बैठना और निषाद का ठौर ठौर पहरा बैठाय कटि भाथा चढ़ाय लक्ष्मण जी के समीप बैठना)

चौपाई (नेपथ्य)

सोवत प्रभुहिं निहार निषादू। भयो प्रेमबश हृदय बिषादू॥
तन पुलकित जल लोचन बहई। बचन सप्रेम लषण सन कहई॥

निषाद— कवित्त

इन्द्र के सदन सम सुन्दर विराजे भौन साजे सो विचित्र जौन सुखद सुहाये हैं। सुमन की सेजैं साज साज के सँवारी शुभ तापै पुनि अरगजा सुगन्धित सिंचाये हैं॥ शीतल सुहावन से शेष के शरीर मञ्जु सेवक लै सीतानाथ सैननि कराये हैं। सोई सिया साहेब कुशाथरी प सोवैं महि अंक बिधना के लिखे सत्य कवि गाये हैं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोहा

केकयनन्दिनि मन्दमति, कठिन कुटिल पन कीन्ह ।
जेहि रघुनन्दन जानकी, सुख औसर दुख दीन्ह ॥

चौपाई

भइ दिनकरकुलबिटप कुठारी । कुमति कीन्ह सब बिश्व दुखारी ॥

लक्ष्मण—निषादराज तुमने बात तो बहुत अच्छी कही परन्तु कहीं कहीं कहते नहीं बना क्योंकि जब तुमने कर्म को प्रधान किया तो केकयी को क्यों दोष देते हो.

कवित्त

कोऊ कोन काहू कहूँ दुःखसुख देत भ्रात आपने करम फल भोगैं सब काल हैं । योग यज्ञ मरन जनम जग-
जाल जेते मात पित बन्धु पूत जी के सब जाल हैं ॥
सपने भिखार भूप भूपति भिखार होय भोर होत भूप
भूप भिक्षुक कँगाल हैं । सोई जग को प्रपञ्च सखा मन
साँच जानि काहू जनि दोष देहु होत लिखे भाल हैं ॥

दोहा

भक्ति भूमि भूसुर सुरभि, सुर हित लागि कृपाल ।
करत चरित धरि मनुजतनु, सुनत मिटै भवजाल ॥

चौपाई

सखा समुझि अस परिहरि मोहू । सियरघुबीरचरणरति होहू ॥

(नेपथ्य)

चौपाई

कहत रामयश भा भिनसारा । जागे जगमङ्गलदातारा ॥

(राम का शयन से उठि प्रातःकृत्य करि भाई सहित जटाजूट बनाना)

सुमन्त—(हाथ जोरि)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई

नाथ कह्यो अस कौशलनाथा। लै रथ जाहु राम के साथा॥
बन देखाइ सुरसरि अन्हवाई। आनेहु वेग फेरि दोउ भाई॥
तात कृपा करि कीजिय सोई। जाते अवध अनाथ न होई॥

राम—सुमन्त धीर धरौ तुम तो पिता के समान धर्ममार्ग के जाननेवाले हो.

चौपाई

तुम सन तात बहुत का कहहूँ। दिये उतर बड़ पातक लहहूँ॥

दोहा

पितु पद परि कहि कोटि विधि, बिनै करब कर जोरि।
चिन्ता कौनेहु बात की, तात करब जनि मोरि॥

चौपाई

सब विधि सो करतव्य तुम्हारे। दुख न पाव नृप शोच हमारे॥

चौपाई (नेपथ्य)

बरबस राम सुमन्त पठाये। सुरसरि तीर आप चलि आये॥

राम—भाई केवट नाव लावो हमको उस पार उतार दो.

केवट—स्वामी मैं नाव न लाऊँगा। क्योंकि आपके प्रभाव को मैं जानता हूँ.

सवैया

पाहन तो भइ नारि लगे रज काठ कि नाउ है मोरी न ख्वैहौं। पालत हौं परिवार यही सन जाय चली तो कहाँ फिर पैहौं॥ पैर धुवाय चढ़ौ यदि नाउ तो नाथ मैं खेय के पार लगैहौं। साँचि कहौं करि सौंगद रावरे पाँय पखारे विना न चढ़ैहौं॥

थोरिक दूर प थाह अहै चलि के प्रभु को वह ठाउँ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देखैहौं। नाथ करौं तरणी घरनी घरनी घर जाय के का समुझैहौं॥ दूसर ना औलंब कछू लरिका परिवार कहाँ से जियैहौं। मारहु तीर सहौं सोउ पीर विना पग धोये न नाउ चढ़ैहौं॥

चौपाई

जो प्रभु अवशि पारगा चहहू। तौ पदपद्म पखारन कहहू॥

सोरठ (नेपथ्य)

सुनि केवट के बयन, प्रेमलपेटे अटपटे।
बिहँसे करुणाअयन, चितै जानकी लखन तन॥

राम—(हँसकर) अच्छा भाई वही करो जिसमें तुम्हारी नाव बचै.

चौपाई (नेपथ्य)

केवट राम रजायसु पावा। पानि कठौता भरि ले आवा।
अति आनन्द उमँगि अनुरागा। चरणसरोज पखारन लागा॥

दोहा

पद पखारि जल पान करि, आप सहित परिवार।
पितर पार करि प्रभुहिं पुनि, मुदित गयो लै पार॥

(केवट का चरण पखारि पार लै जाय खड़ा होना)

चौपाई

केवट उतरि दण्डवत कीन्हा। प्रभु सकुचे यहि कछु नहिं दीन्हा॥
सिय पिय हिय की जाननहारी। मणि मुँदरी मन मुदित उतारी॥

राम—(अँगूठी लै) केवट उतराई लो.

केवट—(चरणों पर गिर)

कवित्त

पायों मैं न काह प्रभु धोय पायँ पावन होय पित्रन को पार किहौं पापहू नशायों है। दानी दयावान नाथ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दीन्ह्यो भरि पूरि मोहि दुःख औ दरिद्र दोष दीनबन्धु दायों है ॥ जन्म २ जोरी मैं मँजूरी तो न जोरे जुरी थोरी कृपा तोरी आज झोरी भरि पायों है। अब तो न चाहि कछू लौटि नाथ देहौ जोय लेहौं मैं सो शीश धारि याही मन लायों है ॥

और जो आपके देने की इच्छा है तो अपनी भक्ति दीजिये.

राम—एवमस्तु.

जानकी—(गङ्गाजी से हाथ जोरि) हे माता ! मेरा मनोरथ पूर्ण करो जिसमें मैं अपने पति और प्यारे देवर के साथ लौटकर आपकी पूजन करूँ.

गंगाबानी—हे जनकनन्दिनी, हे रामप्रिये ! तुम्हारा प्रभाव सब लोक में बिदित है तुमने जो मेरी विनय किया वह तुम्हारी बड़ाई है तदपि मैं तुम को आशीर्वाद देती हूँ कि तुम्हारा मनोरथ सफल होगा और तुम्हारा यश संसार में फैलेगा.

राम—(निषाद से) सखा अब तुम अपने आश्रम को लौट जावो.

चौपाई

निषाद—

नाथ साथ रहि पन्थ देखाई। करि दिन चारि चरन सेवकाई ॥
जेहि बन जाय रहब रघुराई। पर्णकुटी मैं करब सुहाई ॥
तब मोकहँ जस देव रजाई। तस करिहौं रघुबीर दुहाई ॥

राम—(हँसकर) अच्छा चलो.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

द्वितीयाङ्क * दृश्य स्थान प्रयागराज

(रामचन्द्र का सहित निषाद व जानकीजी व लखनलाल के प्रयागराज पहुँच त्रिवेणी स्नान करना.)

चौपाई (नेपथ्य)

तब प्रभु भरद्वाज पहँ आये। करत दण्डवत मुनि उरलाये॥

राम—लक्ष्मण यहां भरद्वाज मुनि का स्थान है उनके दर्शन करना चाहिये.

लक्ष्मण—बहुत अच्छा स्वामी.

द्वितीयाङ्क * दृश्य स्थान भरद्वाज

(एक सघन स्वच्छ कुटी में मुनिमण्डलीयुत भरद्वाज विराजमान हैं राम लखन जानकी का निषादयुत आय प्रणाम करना मुनि का हृदय में लाय आसन पर बैठाय पूजन करि विनय करना.)

भरद्वाज— पद

जय रामचन्द्र आनन्दकन्द, जय सीतापति माधव मुकुन्द। भयो आज सफल मम योग ज्ञान, पायों दरशन तौ श्री गुविन्द॥ अब नहिं अभिलाषा और मोहिं, लखि पद सरोज तो भयों अनन्द। प्रभु करहु कृपा बर देहु एहु, नित नौ सनेह चरणारबिन्द॥

दोहा

कर्म बचन मन छांड़ि छल, जब लगि जनन तुम्हार।
तब लगि सुख सपने नहीं, किये कोटि उपचार॥

राम— चौपाई

सो बड़ सो सब गुणगण गेहू। जेहि मुनीश तुम आदर देहू॥

(हाथ जोरि) स्वामी अब बताइये कि मैं किस मार्ग से जाऊँ।

भरद्वाज—(हँसकर) रामलालजी आपको तो सब मार्ग सुगम हैं तदपि मैं शिष्यों को आपके साथ करता हूँ. (शिष्यों से) त्रिवेणीशरण,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

माधवशरण, भगवत्‌शरण और गुरुदेवशरण हमारे प्राणाधार रामलाल को मार्ग बताइ आवो.

शिष्य—बहुत अच्छा स्वामी.

द्वितीयाङ्क * दृश्य स्थान बाल्मीकि

चौपाई (नेपथ्य)

देखत बन सर शैल सुहाये। बाल्मीकि आश्रम प्रभु आये॥

(शिष्यों युत बाल्मीकि विराजमान हैं निषाद को बिदा करि राम जानकी का सहित लखनलाल प्रवेश मुनि का हृदय में लगाय शुचि आसन पर बैठाय पूजन करि कन्दमूल भोजन कराय स्तुति करना.)

बाल्मीकि— छन्द

श्रुति सेतु पालक राम तुम जगदीश माया जानकी। जो सृजत पालत हरत पुनि रुख पाय कृपानिधान की॥ जो सहस शीश अहीश महिधर लखन सचराचर धनी। सुर काज हित नर राज तन धर चलि दलन निशिचर अनी॥

सोरठा

राम स्वरूप तुम्हार, बचन अगोचर बुद्धिबर।
अविगत अकथ अपार, नेति नेति नित निगम कह॥

राम—(हाथ जोरि)

चौपाई

देखि पाँय मुनिनाथ तुम्हारे। भये सुकृत सब सुफल हमारे॥

(हे मुनिनाथ! हमको तो माता पिता की आज्ञा है कि चौदह बर्ष बन में बास करैं सो आप कोई ऐसा ठावँ बताइये जहाँ मुनियों को दुःख न हो और मैं सुपास से कुछ काल वहां बास करूं)

बाल्मीकि— दोहा

पूछेउ मोहिं कि रहौं कहँ, मैं कहते सकुचावँ।
जहँ न होउ तहँ देव कहि, तुम्हैं देखाऊँ ठावँ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई

सुनौ राम अब कहौं निकेता। बसौ जहां सिय अनुज समेता॥
जिनके हृदय समुद्र समाना। कथा तुम्हारि सुभग सरिनाना॥
भरैं निरन्तर होयँ न पूरे। तिनके हृदय सदन तव रूरे॥
लोचन चातक जिन करि राखे। रहैं दरश जलधर अभिलाखे॥
निदरहिं सरित सिन्धु सरबारी। रूपबिन्दु लहि होंहि सुखारी॥
तिनके हृदय सदन सुखदायक। बसहु अनुजसियसहरघुनायक॥

दोहा

यश तुम्हार मानस बिमल, हंसिनि जीहा जासु।
मुक्ताहल गुणगण चुगहिं, बसहु राम उर तासु॥

चौपाई

प्रभु प्रसाद शुचि सुभग सो बासा। सादर जासु लहै नित नासा॥
तुम्हैं निवेदित भोजन करहीं। प्रभु प्रसाद पट भूषण धरहीं॥
शीश नवहिं सुर गुरु द्विज देखी। प्रीति सहित करि बिनयबिशेखी॥
कर नित करहिं रामपद पूजा। रामभरोस हृदय नहिं दूजा॥
चरण रामतीरथ चलि जाहीं। राम बसहु तिनके मनमाहीं॥
मन्त्रराज नित जपैं तुम्हारा। पूजहिं तुमहिं सहित परिवारा॥
तर्पण होम करैं विधि नाना। विप्र जेवाँय देइँ बहु दाना॥
तुमते अधिक गुरुहिं जियजानी। सकल भाव सेवहिं सनमानी॥

दोहा

सब कर माँगहिं एक फल, रामचरणरति होय।
तिनके मनमन्दिर बसहु, सिय रघुनन्दन दोय॥

चौपाई

काम क्रोध मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा॥
जिनके कपट दंभ नहिं माया। तिनके हृदय बसहु रघुराया॥
सबके प्रिय सबके हितकारी। दुख सुख सरिस प्रशंसागारी॥
कहैं सत्य प्रिय बचन बिचारी। जागत सोवत शरण तुम्हारी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तुम्हैं छाँड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिनके मन माहीं॥
जननी सम जानैं परनारी। धन परार बिषते बिष भारी॥
जिनहिं राम प्रिय प्राण पियारे। तिनके मन शुभसदन तुम्हारे॥
जे हर्षहिं परसम्पति देखी। दुखी होहिं परबिपति बिशेखी॥

दोहा

स्वामि सखा पितु मातु गुरु, जिनके तुम सब तात।
तिनके मनमन्दिर बसहु, सिय समेत दोउ भ्रात॥

चौपाई

औगुणतजि सबके गुण गहहीं। बिप्र धेनु हित संकट सहहीं॥
नीतिनिपुण जिनके जगलीका। घर तुम्हार तिनके मननीका॥
गुण तुम्हार समुझैं निज दोषा। जेहि सबभाँति तुम्हारभरोसा॥
रामभक्ति प्रिय लागै जेही। तेहि उर बसहु सहित बैदेही॥
जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई। प्रिय परिवार सदन सुखदाई॥
सब तजि तुमहिं रहैं लय लाई। तिनके हृदय बसहु रघुराई॥
स्वर्ग नरक अपवर्ग समाना। जहँ तहँ दीख धरे धनुबाना॥
कर्म बचन मन रावर चेरा। राम करहु ताके मन डेरा॥

दोहा

जाहि न चाहिय कबहुँ कछु, तुम सन सहज सनेह।
बसौ निरन्तर तासु उर, सो रावर निज गेह॥

हे नाथ! यह तो आपके उत्तम निवासस्थान हैं परन्तुः—

चौपाई

अब सो सुनहु भानुकुलनायक। आश्रम कहौं समय सुखदायक॥

ग़ज़ल

है शैल अति सुहावन यक चित्रकूट प्यारे।
सुन्दर सघन है कानन मन्दाकिनी कनारे॥ है शैल॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अत्री कि इसतिरी ने सुरसरि कि धार आनी।
पापी अघी अधमजन कोटों है जिसने तारे ॥ है शैल ॥
करते विहार पक्षी मृग सिंह एक सँग में।
नहिं बैर रखते मन में ऋषि अत्रिडर के मारे ॥ है शैल ॥
कीजै वहाँ पै आसन सह जानकी लखन के।
होवैं सनाथ मुनिजन पावैं दरश तुम्हारे ॥ है शैल ॥

राम—बहुत अच्छा ठाम आपने बताया है.

(राम लषन जानकी का प्रस्थान)

द्वितीयाङ्क * दृश्य चित्रकूट

दोहा (नेपथ्य)

चित्रकूट महिमा अमित, कही महामुनि गाय।
आय नहाने सरितवर, सीय सहित दोउ भाय ॥

राम—

चौपाई

अहै लखन कस सुन्दर घाटू। करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू ॥

(लक्ष्मणजी का ठाँव देखि बताना रघुनाथजी का सहित जानकीजी अति सुन्दर कहि आसन जमाना)

चौपाई (नेपथ्य)

यह सुधि कोल किरातन पाई। हर्षे जनु नवनिधि घर आई ॥

एक कोल—(दूसरे कोलों से) ददुवा रे यक जोटिल गिद-हरवा पहरवा पै ऐली छे भल सुघरवा लगली छे चलली ददुवा दिखली ना छे.

अन्य कोल—सँचली कहली छेरे—केहि गयलवा महरली छे.

(सब कोल किरातों का भेंट आगे धरि हाथ जोड़ना)

एक कोल—साहिबवारे हमरे ऊपर बड़ली छे दाया करली भल सुघर ठौर बिचारी छे जौन ई पहरवा प

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ऐली औ ददुवा हमहूँ सब गेदहरवा समेत बड़ भगली भैली छे हम सब साहिबवा तुम्हार सेवा करली छे और बड़े २ शिकार खेलौली हमार सब दिखली छे औ मलिकवा बघवा सिंहवन का खुंब मरली छे और जौन काम ह्वैली तौन हम सब करली.

राम—हम तुम्हारे सहारे तो यहां आये ही हैं.

(कोलों का प्रस्थान)

तृतीयाङ्क * दृश्य कश्मीर

(भरत शत्रुघ्न एक वाटिका में विराजमान हैं)

भरत—(शत्रुघ्न से) प्यारे आज दो दिन से मेरा चित्त घबड़ाता है और रात्रि को बुरे २ स्वप्न दीखते हैं जब से यहाँ आये माता पिता और प्यारे भ्राता के कोई समाचार भी नहीं पाये हैं.

शत्रुघ्न—स्वामी ऐसाही हाल इस दास का भी है. हे ईश्वर ! हमारे माता पिता और प्रिय भाइयों को कुशल से रखना.

(दूत का प्रवेश प्रणाम करि खड़ा होना)

भरत—(दूत से) कहौ सब कुशल तो है कैसे चले ?

दूत—स्वामी गुरुजी ने आपको शीघ्र बुलाया है.

भरत—कौन ऐसा कार्य है जो शीघ्र बुलाया है.

दूत—कार्य तो मुझे नहीं मालूम है.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(भरत का अपने नाना से बिदा माँगि दूत के साथ अयोध्या पहुँचना)

तृतीयाङ्क * दृश्य राजभवन

चौपाई (नेपथ्य)

आवत सुत सुनि केकयनन्दनि । हर्षी रविकुल कैरव चन्दनि ॥
सजि आरती मुदित उठि धाई । द्वारहि भेंटि भवन लै आई ॥

(भरत का प्रवेश केकयी का आरती उतार हृदय में लगाना)

केकयी—भइया तुम्हारे ननिहार में कुशल है.

भरत—हाँ सब कुशल है. और माता यहाँ सब कुशल है.

चौपाई

कहु कहँ तात कहाँ सब माता । कहँ सिय राम लखन प्रिय भ्राता॥

केकयी— चौपाई

तात बात मैं सकल सँवारी । भइ मंथरा सहाय तुम्हारी ॥
कछुक बात बिधि बीच बिगारी । भूपति सुरपति पुर पग धारी ॥

(भरत का बिकल हो गिरना)

भरत— चौपाई

चलत न देखन पायों तोहीं । तात न रामहिं सौंप्यो मोहीं ॥

माता ! पिता को कुछ रोग हुआ था.

केकयी—पुत्र ! राजा से मैंने दो बरदान मन्थरा की सम्मति से माँगे थे एक तुमको राज-दूसरा राम को चौदह बर्ष बनबास इसी शोच में राजा ने प्राण त्याग दिये.

(भरत का बिकल हो पृथ्वी पर गिरना)

चौपाई (नेपथ्य)

बिकल बिलोकिसुतहिंसमुझावत । मनहुँ जरे पर लोनलगावत॥

केकयी— चौपाई

तात राउ नहिं शोचन योगू । बड़इ सुकृत यश कीन्ह्यो भोगू॥
जीवत सकल जन्म फल पाये । अन्त अमरपति सदन सिधाये॥
अस अनुमानि शोच परिहरहू । सहित समाज राज पुर करहू ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कवित्त

भरत—

जो रही न रुचि तोहिं काहे ना हतेस मोहिं सींच रही
तरुको कटाय मूल बर को। जबसे कुमति लीन्ह क्यों न
भयो तनु क्षीण पठवत विपिन सिया औ सीयबर को॥
तोर जो प्रतीत कीन्ह अंत भूप प्राण दीन्ह तोसों दुष्ट
तीय पाय भूलिगे ख़बर को। तोहिं लागे राम खोट बैठ
जाय आँख ओट जग में न और बाम तेरी सरबर को॥

दोहा

राम बिरोधी हृदय ते, प्रकट कीन्ह बिधि मोहिं।
मो समान को पातकी, बादि कहौं कछु तोहिं॥

(नेपथ्य)

चौपाई

अस कहि भरत उठे अकुलाई। कौशल्या पहँ गे दोउ भाई॥
भरतहिं देखि मातु उठिधाई। मूर्छित अवनि परी अकुलाई॥
देखत भरत बिकल भइ भारी। परे चरण तन दशा बिसारी॥

चौपाई

भरत—

मातु तात कहँ देहु देखाई। कहँ सिय राम लखन द्वौ भाई॥
धिक मोहिं भयों बेणु बनआगी। दुसह दाह दुख दूखन भागी॥

(नेपथ्य)

चौपाई

माता भरत गोद बैठारे। आंसु पोंछि मृदु बचन उचारे॥

कौशल्या—(आंसू पोंछि)

चौपाई

अजहुँ बच्छ बलि धीरज धरहू। कुसमय समुझि शोक परिहरहू॥
राम प्राण ते प्राण तुम्हारे। तुम रघुपतिहिं प्राण ते प्यारे॥
भये ज्ञान बरु मिटै न मोहू। तुम रामहिं प्रतिकूल न होहू॥

(बशिष्ठ वामदेव का प्रवेश)

(नेपथ्य)

चौपाई

भरत बशिष्ठ निकट बैठारे। नीति धर्म मय बचन उचारे॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बशिष्ठ— दोहा

सुनहु भरत भावी प्रबल, हर्ष शोक नर साथ।
हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ॥

चौपाई

सब प्रकार भूपति बड़ भागी। बादि बिषाद करिय तेहि लागी॥
राउ राज पद तुम कहँ दीन्हा। पिता बचन फुर चाहिय कीन्हा॥
करहु शीश धरि भूप रजाई। है तुम कहँ सब भाँति भलाई॥
करहु राज परिहरहु गलानी। मानहु मोर बचन हित जानी॥
सौंपेहु राज राम के आये। सेवा करहु सनेह सुहाये॥

सुमन्त—भरतजी इस समय गुरूजी के कहिने अनुसार करना उचित है नहीं तो सब प्रजा दुखित होंगे.

कौशल्या—हे पुत्र शोक को छोड़ो तुम्हारे पिता की आज्ञा है और अब गुरूजी भी कहते हैं तुमको राज करने में कोई दोष नहीं है और जो तुम भी धैर्य को त्यागोगे और राज न करोगे तो अवध अभी तो अनाथही है फिर उजाड़ हो जावेगा.

सोरठ (नेपथ्य)

भरत कमल कर जोरि, धर्मधुरन्धर धीर धर।
बचन अमिय रस बोरि, देत उचित उत्तर सबहिं॥

भरत— दोहा

पितु सुरपुर सिय राम बन, करन कहौ मोहिं राज।
यहिते जानहु मोर हित, कै आपन बड़ काज॥
कैकेयी सुत कुटिल मति, रामबिमुख गत लाज।
तुम चाहौ सुख मोह बश, मोहिंसे अधम के राज॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौपाई

मोहिं राज हठि देहहु जबहीं। रसा रसातल जाइहि तबहीं॥

दोहा

आपन दारुण दीनता, सबहि कहौं शिरनाय।
देखे बिनु रघुबीर पद, जिय की जरनि न जाय॥

चौपाई

एकहि आँक यहै मन माहीं। प्रातकाल चलिहौं प्रभु पाहीं॥
तुम पै पाँच मोर भल मानी। आयसु आशिष देहु सुबानी॥

बशिष्ठ— चौपाई

तात भरत अस काहे न कहहू। प्राण समान राम प्रिय अहहू॥

सुमन्त— दोहा

अवशि चलिय बन राम पहँ, भरत मन्त्र भल कीन्ह।
शोकसिन्धु बूड़त सबहिं, तुम अवलम्बन दीन्ह॥

(सब का प्रस्थान)

चतुर्थाङ्क * दृश्य शृङ्गबेरपुर

(नेपथ्य)

चौपाई

सचिव संग लै तिलक समाजू। चले देन बन रामहिं राजू॥

दोहा

सौंपि नगर शुचि सेवकन, सादर सबहिं बुलाय।
सुमिरि राम सिय चरण तब, चले भरत शिरनाय॥

चौपाई

सई तीर बसि चले बिहाने। शृङ्गबेरपुर सब नियराने॥
समाचार सब सुने निषादा। हृदय बिचार करै सविषादा॥

(निषाद सहित गुहकों के बैठा है एक गुह का प्रवेश)

गुह—राउत दादा आज उत्तर कैती से देखौ बड़ी फौज चली आवत है मैं मनइन ते पूँछेउँ तौन कहिन कि भरत अहीं अरे दादा असमान लौं गरदा छाई है तौन सूझि नाहीं परत है.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

निषाद—(गुहकों से)

चौपाई

कारण कौन भरत बन जाहीं। है कछु कपट भाव मन माहीं॥

गुहक—दाऊ सांच तौ कहत हौ.

चौपाई

जो पै जिय न होत कुटिलाई। तौ कत लीन्ह संग कटकाई॥

अन्य गुह—अरे भरत अहीं केकयी के लरिका बिचारिन होई कि.

चौपाई

जानहिं सानुज रामहिं मारी। करौं अकराटक राज सुखारी॥

निषाद—भाई.

चौपाई

भरत न राज नीति उरआनी। तब कलङ्क अब जीवनहानी॥
सकल सुरासुर जुरहिं जुझारा। रामहिं समर को जीतनहारा॥

दोहा

भाइउ मोर कहा करहु, चलहु सजग सब होहु।
हथवासहु बोरहु तरनि, कीजै घाटा रोहु॥

चौपाई

सन्मुख लोह भरत सन लेहू। जियत न सुरसरि उतरन देहू॥

(गुस्सा होकर) अरे लोकैया मोर धनुहीं बाण उठाय तो लाव और बाँको लेत आयस. (गुहजात सों पुकार कर)

दोहा

भाइउ लायहु धोख जनि, आज काज बड़ मोहिं।

गुहजात—

डरहु न राउत नेक तुम, बीर अधीर न होहिं॥

चौपाई

(नेपथ्य)

इतना कहत छींक भइ बाँये। कहत सगुनियन खेत सुहाये॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सगुनिया—जय रामचन्द्र की देखौ राउत बाँये छींक भै हमारिन जीत होई.

एक बूढ़ा—का जानी का गैजा २ करत हौ अरे तुम्हार बापौ कबहूँ सगुन बिचारिन है "राउत" बायें छींक का यह बिचार आय की लड़ाई तो होवै न करै और हमरे बिचार मां तो भरत राम का मनावै जात हैं.

निषाद—

चौपाई

भाई कहत साँच सब बूढ़ा। सहसा करि पछिताहिं बिमूढ़ा॥

दोहा

गहहु घाट भट सिमिटि सब, लेहुँ मर्म मैं जाय।
बूझि मित्र अरु शत्रु गति, तब तस करब उपाय॥

मगर कुछ नज़र भेंट चही राजा के पास छूँछ जाब ठीक नाहीं ना अच्छा तौ.

पद

जाल उठावो कछुई काका मछुई मार के लावो।
हिरई बाँधो तीर कमनिया चिरई मारि गिरावो॥
खुरपा लैके कन्द मूल फल सुफल जाय लै आवो।
दुरगा बाबा मिरगा लावो लै बंदूख सिधावो॥

गुहक—अच्छा दादा.

(सब का हथियार लेजाना और शिकार कर सब बस्तु लाय पृथक् २ नाम बताना)

कछुई—दादा देखौ तो कौनी २ मछरी लायों है.

निषाद—बतावो.

कछुई—

पद

सौरी सहरी पन्हा मच्छी रोहू टेंगना झकवा हैं।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करछा दँड़वा मगरी पतरा सींग वाम औ कछवा हैं ॥
बरही राजा भुज्जी मछरी गेंगटा सरन महकवा हैं।
मगर सूस घड़ियाल कैकड़ा दशदश मनके नकवा हैं ॥

हिरई—दादा महूँ लायों है तौन सुनो. ऐसी बढ़िया चिरई हैं तौन काहे का कही.

सवैया

मार कबूतर ढेर किहौं औ बटेरन की गठरी बँधवायों। सौन औ साउज मार सबै शिकरा भुजकैल हजारन लायों ॥ बाज ममाखन तीतर लाखन सौन करोरिन ढेरि लगायों। छाँटके नीकी तौ लायों हियाँ औ नकारी रहैं तौनी भूजके खायों ॥

सुफल—दाऊ महूँ फल लायों है तौन सुनौ.

पद

मूरी गाजर घुइयाँ आलू राय पेहटुवा बैरी हैं।
सूरन सुथनी खंत घेंघरुवा बड़े आम की कैरी हैं ॥
करौंद और मुकैया लायों लाल लाल भड़बेरी हैं।
बेल फरेंदा कैथा बड़हर खिन्नी लायों पेरी हैं ॥

निषाद—बुढ़ऊ कहौ कुछ तुमहूँ पायो.

दुरगा बाबा—बचवा हमहूँ जौन लाइन है तौन सुन लेव.

पद

जीते बाघ पकरि मैं लायों चीता मार गिरायों है।
मसता हाथी अरना भैंसा बड़इल बांध के लायों है ॥
भवई भरि के लायों चौघड़ा हरना सांही पायों है।
बड़े २ भारी गैंड़ा लायों तेंदुवन ढेरि लगायों हैं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चतुर्थाङ्क * दृश्य मार्ग

(सैनयुत भरतजी विराजमान हैं निषाद का सपरिवार भेंट लिये प्रवेश)

भरत—(सुमन्त्र से) सुमन्त्रजी यह कौन हैं.

सुमन्त—राजकुमार यही निषाद रघुनाथजी का प्यारा सखा है.

(राम का सखा सुनि भरत का स्यन्दन से उतर दौड़कर निषाद के गले में लिपट जाना)

भरत—भाई निषाद कुशल हौ.

निषाद— चौपाई

कुशल मूल पदपङ्कज देखे। मैं तिहुँ काल कुशल जन लेखे॥
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरे। सहित कोटि कुल मङ्गल मोरे॥

भरत—भाई निषाद तुम धन्य हो जो श्रीरामचन्द्र ने तुम को भरि अङ्क भेंटा.

निषाद—स्वामी अब इस नीच की मड़ैया में पधारिये तो मैं कृतार्थ हों.

भरत—बहुत अच्छा.

चतुर्थाङ्क * दृश्य बन

चौपाई (नेपथ्य)

शृङ्गबेरपुर भरत दीख जब। भये सनेह बश अङ्ग शिथिल तब॥

भरत— चौपाई

सखा हमैं सो ठांव देखाऊ। नेकनयन मन जरनि जुड़ाऊ॥
जहँसियरामशयननिशिकीन्हा। धन्य सोभूमिचरणजहँ दीन्हा॥

निषाद—चलिये सरकार. (शीशम का वृत्त देखाकर) स्वामी यही वृक्ष है यहीं सरकार ने सहित जानकीजी के रात्रि को शयन किया था.

(भरत का प्रदक्षिणा करि प्रणाम करना)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चतुर्थाङ्क * दृश्य गंगातट

(भरत का ससैन्य गङ्गातट पर विराजमान होना)

चौपाई (नेपथ्य)

यहि बिधि रात लोग सब जागा। भा भिनुसार उतारा लागा॥

भरत—हे सखे ! अब नाव मँगाय सैन्य को पार उतारो.

(निषाद का नई नावैं मँगाय सबको पार उतारना)

चतुर्थाङ्क * दृश्य प्रयागराज

चौपाई आश्रम भरद्वाज

सुनत रामगुणग्राम सोहाये। भरद्वाज आश्रम तब आये॥

(शिष्यों सहित भरद्वाज विराजमान हैं सबका भरत सहित प्रवेश और यथायोग्य प्रणाम करि बैठना)

भरद्वाज—बच्चा भरत तुम कुछ शोच न करो मैंने सब सुना है बिधि गति अति कठिन है तुम्हारी माता का कोई दोष नहीं है यह सब दैवीगति है.

चौपाई

तात तुम्हार विमल यश गाई। पैहैं लोकहु बेद बड़ाई॥
करतिहु राज तुम्हैं नहिं दोषू। रामहिं होत सुनत संतोषू॥

दोहा

अब अति कीन्हेउ भरत भल, तुम्हैं उचित मत एहु।
सकल सुमङ्गलमूल जग, रघुवरचरण सनेहु॥

और हे बच्चा ! रामचन्द्र को भी तुमसे अत्यन्त प्रीति है रात्रि भर तुमको याद करते रहे और बार बार नेत्रों में जल भरि भरि तुम्हारी सराहना करते रहे.

चौपाई

तात करहु जनि शोच विशेखी। सब दुख मिटिहि रामपददेखी॥

दोहा

तजहु शोच धीरज धरहु, अतिथि प्राणप्रिय होहु।
कन्द मूल फल देहिं हम, लेहु तौन करि छोहु॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भरत—(कुछ शोच)

चौपाई

शिर धरि आयसु करिय तुम्हारा। परम धर्म यह नाथ हमारा॥

(नेपथ्य)

चौपाई

भरतबचन मुनिवर मनभाये। शुचि सेवक तब निकट बुलाये॥

भरद्वाज—(सेवकों से)

चौपाई

चाहिय कीन्ह भरत पहुनाई। कन्द मूल फल आनहु जाई॥

(शिष्यों का कन्द मूल फल लाना और सबका भोजन करि बिदा होना)

(नेपथ्य)

चौपाई

पथगति कुशल संग सब लीन्हे। चले चित्रकूटहि मन दीन्हे॥

दृश्य चित्रकूट

चतुर्थाङ्क

(राम लखन जानकीयुत विराजमान हैं)

जानकी—

सोरठ

लख्यों स्वप्न यह रात, सह समाज आये भरत।
संग मातु लघु भ्रात, तव दुख दुखी मलीन सब॥

राम—हे लक्ष्मणजी ! यह स्वप्न अच्छा नहीं है कोई असमंजस की बात होनेवाली है.

(राम का शोच युत हो जाना)

(एक कोल का प्रवेश)

कोल—(राम से) महाराज भरतजी ऐली छे और सेना तुपकिया बहुली छे.

(नेपथ्य)

चौपाई

सो सुनि रामहिं भा अति शोचू। इत पितु बध उत बन्धु सकोचू॥
लखन लख्यो प्रभु हृदय खँभारू। कहत समयसम नीति बिचारू॥

(राम को शोचवश देखि लक्ष्मण का कहना)

लक्ष्मण—

कवित्त

पाय बिन रजाय कहौं अनरथ यह सहि न जाय
राज में भुलाय अर्थ धर्म को गँवायो है। जान बिन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सहाय सो कुभाय मन्त्र को मिलाय नाथ समय पाय भलो सैन साज लायो है ॥ राज पाय जगही बौराय कहै वेद गाय दोष को लगाय भरत साधु बड़ कहायो है। कीन्ह तो उपाय भली रञ्चक रिपु रहि न जाय देहहुँ समुझाय समर जौन मनहिं भायो है ॥

और हे नाथ! मेरे हृदय में भरत की ओर से कुछ थोड़ा रंज नहीं है कि जिसको मैं सहि सकूँ आप इस में कुछ अनुचित न मानियेगा.

दोहा

क्षत्रि जाति रघुकुलजनम, रामानुज जग जान।
लातहु मारे चढ़त शिर, नीच को धूरि समान ॥

कवित्त

अब लौं सह्यों मैं पीर जासे भा हृदय बिदीर मोहू तोहूँ बीर धीर काहां लग लाइहौं। साथ नाथ धनु हाथ तौपै तो शपथ खात लाग घात भली भांत रण सरसाइहौं ॥ क्रोध जौन पाछिल हिये में धक्क धक्क होत तौन आज पावक प्रचण्ड भभकाइहौं। अयश अँगेज प्रभु करि सेन रेज रेज केकयीसुवन शरसेज पै सुवाइहौं ॥

चौपाई

जो सहाय कर शंकर आई। तदपि हतौं रण राम दुहाई ॥

चौपाई (नेपथ्य)

जग भै मगन गगन भइ बानी। लखन बाहुबल बिपुलबखानी॥

(आकाशवाणी होना)

छन्द

तुम सन जग कोई भयो न होई रामानुज बलधारी। अति तेजनिधाना परम सुजाना कीरति यश

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बिस्तारी॥ कारज जो कीजे मन गुन लीजे अनुचित उचित बिचारी। निज क्रोध निवारो समय निहारो पछितैहौ करि रारी॥

राम—हे तात! जो तुमने कहा सो सब सत्य है परन्तु.

दोहा

भरतहिं होय न राजमद, विधि हरि हर पद पाय।
कबहुँ कि कांजी सीकरहिं, क्षीरसिन्धु बिनशाय॥

चौपाई

लखन तुम्हार शपथ पितु आना। शुचि सुबन्धु नहिं भरत समाना॥
जो न होत जग जन्म भरत को। सकल धर्म धुर धरणि धरत को॥

चतुर्थाङ्क * दृश्य मन्दाकिनी तट

(सहित समाज के भरत का मन्दाकिनी स्नान करना और निषाद का रघुनाथजी के आसन का चिह्न बतलाना)

निषाद—(दूर से)

चौपाई

नाथ देखिये बिटप बिशाला। पाकर जम्बु रसाल तमाला॥

दोहा

जहँ बैठें मुनिगण सहित, नित सिय राम सुजान।
सुनहिं कथा इतिहास सब, आगम निगम पुरान॥

चौपाई (नेपथ्य)

सखाबचन सुनि बिटप निहारी। उमगेउ भरत बिलोचन बारी।
करत प्रणाम चले दोउ भाई। कहत प्रीति शारद सकुचाइ॥

चतुर्थाङ्क * दृश्य चित्रकूट

(लक्ष्मण जानकी युत राम विराजमान हैं सहित शत्रुघ्न के भरत का निषाद युत दूर से प्रणाम कर पाहि पाहि पुकारना)

लक्ष्मण—(राम से) स्वामी भरत शत्रुघ्न आपको प्रणाम करते हैं.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(राम का दौड़कर हृदय से लगाय यथोचित मिल्ल बैठना)

निषाद— दोहा

नाथ साथ मुनिनाथ के, मातु सकल पुर लोग।
सेवक सेनप सचिवगण, आये विकल वियोग ॥

(राम का शत्रुघ्नजी को जानकीजी समीप छोड़ि जाना)

चतुर्थाङ्क * दृश्य गोदावरी तट

(वशिष्ठजी का सहित समाज विराजमान होना राम का प्रवेश गुरु को दण्डप्रणाम करि सबसे मिलना)

राम—गुरुजी आप लोग वहीं आश्रम पर चलिये.

वशिष्ठ—पुत्र बहुत अच्छा चलो.

(सबका प्रस्थान)

चतुर्थाङ्क * दृश्य चित्रकूट

(शत्रुघ्न युत जानकी विराजमान हैं सह समाज वशिष्ठ का प्रवेश जानकी का सबसे यथोचित मिलना)

वशिष्ठ—हे प्यारे! तुम्हारे आने के पीछे तुम्हारे वियोग में राजा सुरपुर सिधारे.

(राम का शोकित हो जाना गुरुजी के समुझाने से धैर्य धरि तिलाञ्जलि देकर आसन पर आना)

चौपाई (नेपथ्य)

शुद्ध भये द्वै बासर बीते। बोले गुरु सन राम सप्रीते ॥

राम— चौपाई

नाथ लोग सब निपट दुखारी। कन्द मूल फल अम्बु अहारी ॥
सब समेत पुर धारिय पांऊ। आप यहां अमरावति राऊ ॥
बहुत कह्यों सब किह्यों ढिठाई। अबजो उचित सोकरियगुसाँइ ॥

वशिष्ठ— दोहा

धर्मसेतु करुणायतनु, कस न कहहु अस राम।
लोग दुखित दिन द्वैदरश, देखि लहैं बिश्राम ॥

चौपाई (नेपथ्य)

बोले मुनिवर समय समाना। सुनहु सभासद भरत सुजाना ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वशिष्ठ— दोहा

राखे राम रजाय रुख, हम सब कर हित होय।
समुझि सयाने करौ अब, सब मिलि सम्मत सोय॥

चौपाई

केहि विधि अवध चलहिं रघुराऊ। कहौ समुझि सो करिय उपाऊ।

(सबका शिर झुका लेना)

भरत— दोहा

अनुगामी तौ बचन को, मैं अबुद्धि हतभाग।
बूझिय मोहिं उपाय अब, सो सब मोर अभाग॥

वशिष्ठ—अच्छा तो मेरी यह मति है.

चौपाई

तुम कानन गौनौ द्वौ भाई। फिरिहैं सीय लखन रघुराई।

भरत— चौपाई

कानन करौं जन्म भरि बासू। यहिते अधिक न मोर सुपासू॥

दोहा

अन्तर्यामी राम सिय, तुम सर्वज्ञ सुजान।
जो फुर कहो तो नाथ निज, कीजै बचन प्रमान॥

वशिष्ठ—अच्छा राम के समीप चलो.

(सबका उठि राम के समीप जाना)

वशिष्ठ—(राम से)

दोहा

सबके उर अन्तर बसौ, जानौ भाव कुभाव।
पुरजन जननी भरत हित, होय सो करहु उपाव॥

राम—स्वामी आपही कोई उपाय बताइये, यह सब उपाय आपही के हाथ में है.

चौपाई

प्रथम जो आयसु मोकहँ होई। माथे मानि करौं सिख सोई॥
पुनि जेहिका जस होय रजाई। सो सब भाँति करैं सेवकाई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वशिष्ठ— चौपाई

मोरे जानि भरत रुचि राखी। जो कीजै सो शुभ शिव साखी॥

दोहा

भरत विनय सादर सुनिय, करिय विचार बहोर।
करब साधुमत लोकमत, नृप नय निगम निचोर॥

राम— चौपाई

नाथशपथ पितुचरण दोहाई। भयो न भुवन भरत सम भाई॥
भरत कहैं सो किहे भलाई। मो कहँ सदा भरत मत भाई॥

वशिष्ठ—तात भरत जो कुछ तुमको कहना हो वह संकोच त्यागकर कहो.

भरत— चौपाई

कहौं कहावौं का अब स्वामी। कृपा अम्बुनिधि अन्तरयामी॥
देव एक बिनती सुनि मोरी। उचित होय सो करब बहोरी॥
तिलक समाज साजि सब आना। करिय सफल प्रभु जो मन माना॥

दोहा

सानुज पठइय मोहिं बन, कीजै सबहि सनाथ।
नतरु फेरिये बन्धु दोउ, नाथ चलौं मैं साथ॥

चौपाई

नतरु जाहिं बन तीनौं भाई। बहुरिय सीय सहित रघुराई॥
जेहि बिधि प्रभु प्रसन्न मन होई। करुणासागर कीजिय सोई॥
कहौं बचन सब स्वारथ हेतू। रहत न आरत के चित चेतू॥

दोहा

प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि, जो जेहि आयसु देव।
सो शिर धरि धरि करहिं सब, मिटहि अनट अवरेव॥

राम— चौपाई

तात भरत तुम धर्मधुरीणा। लोक बेद बिधिपरम प्रवीणा॥
जानहु तात तरणि कुलरीती। सत्यसिन्धु पितु कीरति प्रीती॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तुमहिं बिदित सबही कर करमू । आपन मोर परम हित धरमू ॥
सो तुम करौ करावौ मोहू । तात तरणिकुलपालक होहू ॥
सो बिचारि सहि संकट भारी । करौ प्रजा परिवार सुखारी ॥
जानि तुम्हैं मृदु कहौं कठोरा । कुसमय तात न अनुचित मोरा ॥

भरत--

चौपाई

नाथ भयो सुख साथ गये को । लह्यो लाभ जग जन्म भये को ॥
अब कृपाल जस आयसु होई । करौं शीश धरि सादर सोई ॥
कोइ अवलम्ब देवमोहिं देवा । अवधि पार पावों जेहि सेवा ॥
अब गुसाँइ मोहिं देहु रजाई । सेवहुँ अवध अवधि लगजाई ॥

दोहा

जेहि उपाय मुनि पायँ जन, देखहुँ दीनदयाल ।
सो सुख देइय अवधि लग, कोशलपाल कृपाल ।

राम—

चौपाई

पितु आयसु पालिय दोउ भाई । लोक बेद भल भूप भलाई ॥
गुरु पितु मात स्वामि सिखपाले । चलत सुगमपगपरहिंनखाले॥

दोहा

मुखिया मुख से चाहिये, खान पान कहँ एक ।
पालै पोषै सकल अँग, तुलसी सहित बिबेक ॥

चौपाई

(नेपथ्य)

बन्धु प्रबोध कीन्ह बहु भाँती । बिन अधार मन तोष न छाती ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पञ्चमाङ्क * दृश्य चित्रकूट

(जानकी लक्ष्मण राम का स्फटिक शिला पर विराजमान होना)

चौपाई (नेपथ्य)

एक बार चुनि कुसुम सुहाये। निजकर भूषण राम बनाये ॥
सीताहि पहिराये प्रभु सादर। बैठे फटिक शिला परमादर ॥

जयन्त—(स्वतः) वाह वाह क्या सुन्दरता इस समय चित्रकूट पर हो रही है और यह कोई बड़े वीर इसकी रक्षा पर हैं क्या जो मैंने सुना है कि भगवत् का अवतार हुआ है वह यही हैं नहीं नहीं मेरी भूल है यदि भगवत् का अवतार होता तो प्रिय भार्या का शृङ्गार इस प्रकार वनयात्रा में न करते औ क्या आश्चर्य है जो हो अच्छा मैं काकरूप धरि इनकी परीक्षा लूं.

(रामचन्द्र का जानकीजी के जङ्घा पर शिर धरि शयन करना जयन्त का काकरूप आय जानकीजी के चोंच मारना)

चौपाई (नेपथ्य)

चला रुधिर रघुनायक जाना। सींक धनुष शायक सन्धाना ॥
प्रेरित मन्त्र ब्रह्मशर धावा। चला भाग बायस भय पावा ॥

पञ्चमाङ्क * दृश्य इन्द्रभवन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पञ्चमाङ्क * दृश्य कैलाश

(गणान युत शिव विराजमान हैं जयन्त का प्रवेश)

जयन्त—हे महादेवजी ! मुझको बचाइये मैं इन्द्र का पुत्र जयन्त हूं, हाय हाय मुझे यह बाण भस्म किये देता है.

महादेव—भाग दुष्ट मेरी सामर्थ्य तुझे बचाने की नहीं है तू राम का द्रोही है दूर हो नहीं तो एक त्रिशूल और मारूंगा.

(जयन्त का प्रस्थान)

पञ्चमाङ्क * दृश्य ब्रह्मलोक

(सनकादि युत ब्रह्मा विराजमान हैं जयन्त का प्रवेश)

जयन्त—हे पितामह ! इस शर से मेरी रक्षा कीजिये.

ब्रह्मा—दूर हो चाण्डाल तू इस योग्य नहीं है चला जा तेरी रक्षा कोई नहीं कर सकता.

पञ्चमाङ्क * दृश्य वन

(जयन्त विकल भागा जाता है नारद का प्रवेश)

नारद—अरे जयन्त तू क्यों भ्रमणा में पड़ा है तेरा सहायक संसार में कोई नहीं है तूने बड़ा अपराध किया है तेरे बचने का यही उपाय है कि श्रीरामचन्द्र की शरण जा वही तेरा अपराध क्षमा करेंगे वह दीनदयालु हैं तेरे दीन वचनों से

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अतुलित प्रभाव तुम्हरो जान्यों न मैं अनारी ॥
व्याकुल भर्यो जगत् में तौ बाण तेज भारी ।
राखा न कोऊ मोकों बिधि इन्द्र तिरपुरारी ॥
निज कृत्य फल को पायों डारै है बाणजारी ।
अब पाहि पाहि भगवन् आयों शरण तुम्हारी ॥

राम— दोहा

कीन्ह कठिन तैं कर्म अति, उचित अहै बध तोर ।
शरण पुकारे ताहि ते, देवँ नयन यक फोर ॥

(राम का जयन्त की आँख फोरि छोड़ देना)

(सबका प्रस्थान)

इति श्रीरामरसामृतसागरनाटके सकलकलिकलुषविध्वंसने रामभरतसंवाद-वर्णनं नाम षष्ठो भागः समाप्तः ॥ ६ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor